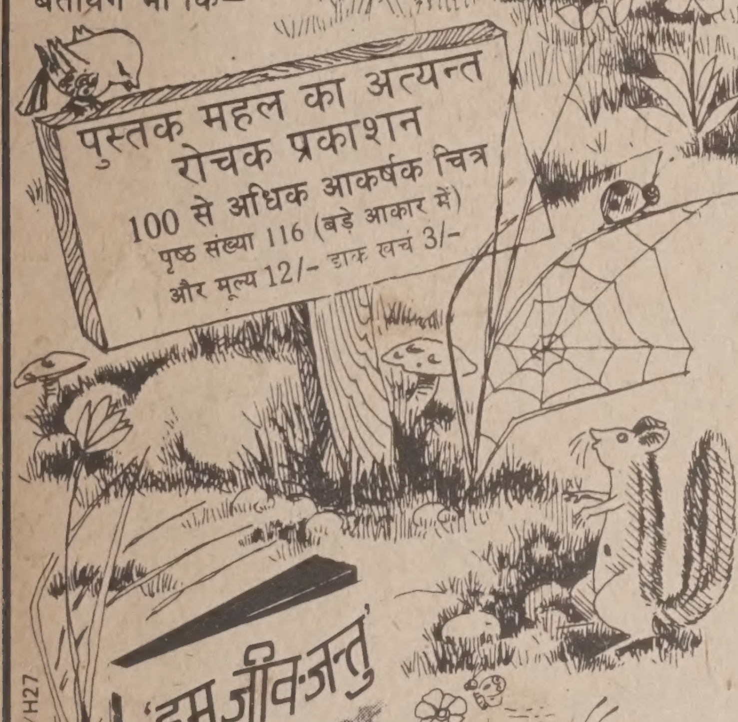
घर बैठे एक अनोखे चिड़ियाघर की सैर!

तरह तरह के जानवरों को देखकर तुमको प्रसन्नता होती है न? कैसा रहे यदि घर बैठे ही इन जानवरों के साथ तुम्हारी मुलाकात का इन्तजाम करा दिया जाये?

'हम जीव-जन्तु' एक ऐसी ही पुस्तक है जिसका एक-एक पृष्ठ तुम पलटते जाओगे और जीव-जन्तुओं के विशाल संसार के 50 सदस्य क्रम से तुम्हारे सामने न सिर्फ सजीव होते जायेंगे बल्कि वे तुम्हें अपने बारे में विस्तार से बतायेंगे भी कि–





• वे कहां कहां पाये जाते हैं? • उनकी उम्र, कद व वजन कितना है? • शारीरिक रचना व स्वभाव में वे कैसे हैं? • उनकी क्या-क्या विशेषताएं हैं? • कौन उनके मित्र हैं, कौन शत्रु? • उनका पारिवारिक जीवन कैसा है? और साथ ही ऐसी अनेक दिलचस्प बातें जो तुमको हैरत में डाल देंगी। लो एक झलक देखो तो जरा–

'मेरी आंखों से आंखें न मिलाना क्योंकि इन आंखों का कोई जवाब नहीं। मेरी दोनों आंखें एक दूसरे से अलग बिल्कुल स्वतंत्र कार्य करती हैं। पानी में तैरते हुये एक अगर सतह के ऊपर देख रही है तो दूसरी नीचे।' **–समुद्री घोड़ा**

'मेरे जाले के महीन तार तो तुमने देखे होंगे। पांच लाख ऐसे तारों को अगल बगल रखते जाओ और फिर नापो तो हुआ कुल एक इंच या इसी तार से पूरी पृथ्वी को सात बार लपेटने में जितना तार लगे इसे तौल लो, वज़न आया कुल एक पौण्ड। बस! इसी से अन्दाज़ा लगा लो मेरे बनाये तार की बारीकी का।' **–मकड़ी**

अपने गुणों के आधार पर तुम्हारे साथ दोस्ती का दावा करने वाले अन्य जीव-जन्तु हैं–उल्लू, ऊदबिलाव, कंगारू, कनखजूरा, गैंडा, चमगादड़, जुगनू, जिराफ़, पॉपस, पेन्गुइन, शेर, बीवर, मूंगा, रेन्डियर, शुतुरमुर्ग, हंस, दीमक, हाथी आदि जो तुम्हें अपना परिचय कैसे देंगे इसकी भी एक झलक देख लो–

'तोता हूं–पिंजरे में बंद रोता हूं'

'तैरता टापू तेल का–किस्सा मुझ व्हेल का!'

बच्चों और बड़ों के लिए समान रूप से उपयोगी इस पुस्तक की रचना की है–

युवा लेखक–चित्रकार रवि लायटू ने।

VANDANA/PM/H27

अपने निकट के बुक स्टाल एवं रेलवे तथा बस अड्डों पर स्थित बुक स्टालों पर मांग करें अन्यथा वी० पी० पी० द्वारा मंगाने का पता

पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-110006

नया शो रूम: 10-B, नेता जी सुभाष मार्ग, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002.

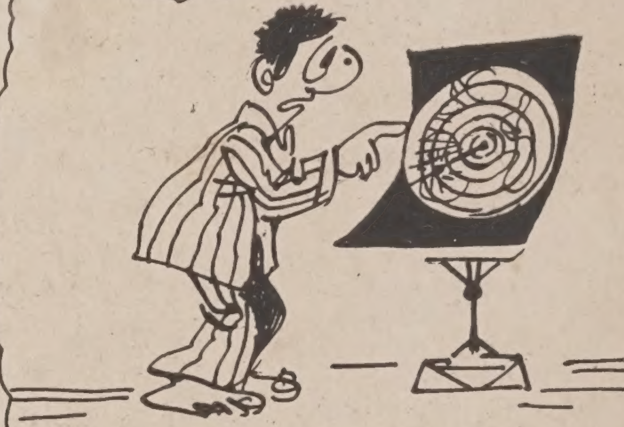
राडार के नये दीवाने मॉडल

राडार जहाजों व साइक्लोन तूफान आदि की सूचना देने वाला महत्वपूर्ण यंत्र है। लड़ाई में तो दुश्मन के जहाजों का पता लगाने का काम राडार के जिम्मे ही पूरी तरह होता है। ऐसे उपयोगी यंत्र का एक घरेलू मॉडल भी तैयार किया जाना चाहिये जिनसे घरों-दफ्तरों में बिमला जी, कमला जी, शर्मा जी, वर्मा जी और श्रीवास्तवा जी भी लाभ उठा सकें। ऐसे ही घरेलू मॉडलों का काल्पनिक परिचय—



श्रीमती जी मॉडल

यह राडार पत्नी को पति के बारे में बतायेगा। इस समय वह किस दोस्त के घर ताश खेल रहे हैं कहां क्या गुल खिला रहे हैं।



श्रीमान जी मॉडल

इस राडार द्वारा श्रीमान जी को पता लगेगा उनके मोजे कहां हैं, जूते कहां है और ऐनकें कहां हैं। उनका आधा जीवन इन चीजों को खोजते बीतता है।



कुमारी मॉडल

इस टाइप का नाजुक राडार मीना को यह बतायेगा कि उसका कौन सा आशिक इस समय उसके घर के चक्कर लगा रहा है।



बाबू मॉडल

इस मॉडल का राडार सूचना देगा जब बाबूजी सीट पर से नदारद होंगे कि वह कैंटीन में बैठे हैं या किसी और टेबल पर अपने किसी मित्र से गप्पें हांक रहे हैं।

मेहमान मॉडल

शीला, गजब हो गया। तुम्हारा फुफेरा भाई अपनी बीबी और ग्यारह बच्चों को लेकर सूटकेस होल्डाल से लैस हमारी ओर आ रहा है।



चैकमेट मॉडल

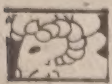
इनके अतिरिक्त ऐसे मॉडल भी बनें जो यह सूचना दे सकें कि टी वी/रेडियो का लाइसेंस या राशन कार्ड चैक करने वाला इंसपैक्टर आ रहा है।

लाल माडल यह बतायेगा कि सेल्स टैक्स या इन्कमटैक्स वाले तो नहीं आ रहे



आपका भविष्य

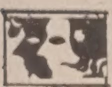
पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र देवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा



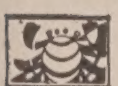
मेष : सेहत कुछ खराब, अन्य हालात ठीक चलेंगे, कारोबार अच्छा चले, परिवार से सुख, मनोरंजन पर व्यय, यात्रा में कष्ट, सुस्ती आदि के कारण काम देर से बनेंगे, मन में उदासी, नातेदारों से मेल जोल।



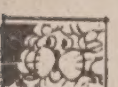
वृष : आय में वृद्धि, परिश्रम अधिक एव सफल रहेगा, व्यय यथार्थ, आर्थिक दशा सुधरेगी, संघर्ष काफी करना पड़ेगा, सरकारी कामों में सफलता, कोई मुश्किल काम बन जाएगा, झगड़े आदि से बचें।



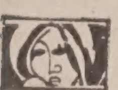
मिथुन : घरेलू चिन्ता बनेगी, मन परेशान, फिर भी परिश्रम एवं प्रयत्न करने पर सफलता मिलती रहेगी, यात्रा में सुख, अफसरों से मेल-जोल, काम भी बनते रहेंगे, बड़ों की ओर से कुछ चिन्ता, मनोरंजन आदि में रुचि।



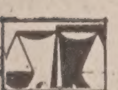
कर्क : कारोबार मध्यम या परेशानी आएगी, भाग्य भी पूरा साथ न देगा, लाभ उम्मीद से कम या देर से मिलेगा, सुधार एवं प्रगति होगी, धार्मिक कामों में रुचि, यात्रा सफल अधूरे काम बनेंगे, कारोबार से लाभ बढ़ेगा।



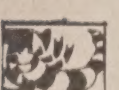
सिंह : सेहत में गड़बड़, व्यापार मध्यम, जरूरी काम समय पर बनते रहेंगे, कोई अप्रिय घटना हो सकती है, यात्रा न करें, वाद-विवाद से परेशानी, परिश्रम सफल, मित्र सहयोग देंगे।



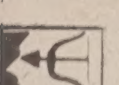
कन्या : व्यर्थ का कलेश या चिन्ता, यात्रा सफल होगी, नातेदारों से मेल जोल, सफलता मिलने लगेगी, अफसरों से मेल जोल, लाभ अच्छा होगा, मित्र साथ से काम चलेगा, विरोधी काफी रहेंगे।



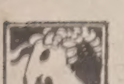
तुला : मशीनरी आदि से परेशानी या व्यय, अन्य हालात ठीक चलेंगे, यात्रा में सुख, धन लाभ, कुछ देर से मिलेगा, कामकाज में व्यस्तता बढ़ेगी, परिवार से सुख, व्यर्थ की चिन्ता लगी रहेगी, काम देर से बनेंगे।



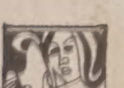
वृश्चिक : लाभ खर्च में समानता रहेगी, व्यर्थ के झंझट पैदा होंगे, लाभ आशा से कम ही होगा, कारोबार में दृढ़ता आएगी, काम समय पर बनने से खुशी होगी। रुकावटें दूर होती जाएंगी।



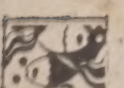
धनु : घरेलू एवं कारोबारी कामों में व्यस्तता बढ़ेगी, यात्रा में सुख, मन परेशान रहेगा, लाभ यथार्थ होगा, अड़चन, व्यय बढ़ेगा, लाभ में वृद्धि, काम बनते जाएंगे हालात भी सुधरेंगे।



मकर : लाभ खर्च समान, घरेलू समस्याओं से परेशानी, मित्र साथ देंगे, आय में वृद्धि, संघर्ष काफी आएंगे, कारोबार सुधरता महसूस होगा, झगड़े झंझटों से परेशानी, यात्रा में वृद्धि या हानि।



कुम्भ : लाभ में रुकावट, व्यय अधिक, फिर भी हालात में सुधार होता दिखाई देगा और कारोबार धीरे-धीरे आगे बढ़ता जाएगा, यात्रा सफल होगी, व्यर्थ की बातों का मन पर बोझ रहेगा, अन्य हालात सुधरेंगे।



मीन : दिन खास ठीक नहीं, यात्रा में कष्ट या परेशानी, भाईयों से सहयोग, काम बनते रहेंगे, वातावरण सुधरता जाएगा, परिवार से सुख, लाभ बढ़ेगा, शत्रु पक्ष से बचना चाहिए, अन्य हालात ठीक चलेंगे।

आपके पत्र

हास्य विशेषांक के मुख पृष्ठ पर चिल्ली को मोटर साइकिल चलाते दिखाया गया है, उसे देखकर हंसी आ गई। बीच में दिलीप बेंगसरकर का पोस्टर देखा, काफी भाया। कृपया आप ऐसे पोस्टर देते रहा करें। कभी-कभी उन पोस्टरों में आप नेताजी सुभाष चन्द्र बोस तथा अन्य क्रान्तिकारी को दिया करें तो दीवाना में चार चांद लग जायेंगे।

अन्य स्तम्भ में आपस की बातें, लड़कियों को छेड़ने से बचाओ, बदनाम कप, अप्रैल फूल दिवस ने हंसा-हंसा कर दोहरा कर दिया, वह दिन अब दूर नहीं जब दीवाना फिर प्रथम बालक पत्रिका बन जाएगी। बड़ों के मन भाएगी तथा बूढ़ों को भी बार-बार हंसाएगी।

—प्रेम बाबू शर्मा, बगीची पीरजी

अंक आठ बेहद पसंद आया. सचमुच बढ़े हुए आठ रंगीन पृष्ठ थे हर पृष्ठ पर नई दीवानगी थी, हर पृष्ठ अनोखा था और हर दीवानगी में नई अक्लमंदी थी, सब कुछ था इस अंक में मगर, मोटू-पतलू, सवाल यह है, बुरे फंसे, नामी चोर, लल्ला की लव स्टोरी, गरीब चन्द की डाक, फिल्म जगत, आदि न देखकर मन दुखी हुआ मगर, अन्य स्तम्भों ने सारी कमी पूरी कर दी. गरीब चन्द की बारात में दावत खूब अच्छी लगी. सबसे अच्छा रहा दिलीप बेंगसकार का पोस्टर। कृपया भविष्य में भी इसी प्रकार पोस्टर देते रहें। **—वेद प्रकाश अमित, दिल्ली**

दीवाना का 'हास्य विशेषांक अंक'' ८ बड़ी देर से मिला। पर पढ़ कर इतनी खुशी हुई कि आप उसका अनुमान नहीं लगा सकते। पर इन सब के बावजूद 'काका हाथरसी' की कमी खटकी। दिलीप बेंगसरकर का पोस्टर मेरे घर की शोभा बढ़ा रहा है। कृपया अगले अंक में इयान बाथम का ब्लोअप दीजिये।

—राज पाल सिंह प्रहार, बीकानेर,

दीवाना का मैं दस साल से दीवाना हूं। तेज के नाम से पहले जब दीवाना निकलती थी तब से। हर बार की तरह इस बार अंक ८ पढ़ा। पत्रिका हाथ में आते ही हंसी आ गई। पढ़ कर क्या हाल हुआ आप को क्या बताऊं। लल्लू, राजाजी, सिलबिल-पिलपिल और प्रत्येक हास्य से भरपूर व्यंग चित्र ने दिल को गार्डन-गार्डन कर दिया।

दीवाना की बात निराली, हंसी से भरी इस की एक-एक डाली।

—रामकिशन 'जूनू' एफ २२, नारायणा विहार, नई दिल्ली

दीवानी का अंक नं. ८ मिला। हर बार की तरह इस बार भी आपने गागर में सागर भर कर हम पाठकों (दीवानों) को खुश कर दिया। हास्य अंक के रूप में यह एक सफल अंक था। सभी फीचर इतने अच्छे थे कि किसी एक की दूसरे से तुलना ही नहीं कर सकते।

अन्त में दीवाना को लाखों शुभ कामनाएं देते हुए एक राय दूंगा कि वर्ग पहेली में भेजने वाले का नाम और पता लिखने के लिए स्थान होना चाहिए।

—नरेन्द्र राजीव—कानपुर

आपका सुझाव मान लिया है और पिछले अंक से लागू भी कर दिया है।



मुख पृष्ठ पर

देश भर में जोरों शोरों से
तैयारी हो रही एशियाड की
विदेशियों की तब आ जायेगी
सड़कों पर एक बाढ़ सी।
सोचे चिल्ली इसी पहलू पर
सिर पर रख कर जन्तर मन्तर
आव भगत करनी है सबकी
नहीं आये कोई उसमें अन्तर॥

दीवाना

अंक : ४३ वर्ष : १८ १ – १५ जून १९८२

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज पाक्षिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा	:	२७ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	१४ रुपये
एक प्रति	:	१.५० रुपये

भविष्य दर्शन

अखिलेश्वर

लम्बे समय के अध्ययन और भविष्य दर्शन से यह लगभग निश्चित हो चुका था कि मेरे भविष्य में सिर्फ तीन चीजें हैं-उदर-व्याधि, वायु विकार और पत्नी वैमनस्य। आदत सी बन चुकी थी कि प्रातःकाल अखबार उठाते ही सर्वप्रथम भविष्य दर्शन का पठन-पाठन करता था और प्रायः बिना पढ़े ही जान लेता था कि कल क्या होगा। भविष्य पढ़ने के अभ्यास ने मुझे इस लायक बना दिया था कि मैं बिना पढ़े ही अपना भविष्य जान सकूं। उदाहरणार्थ सोमवार का अखबार हो तो मेरे भविष्य में उदर-व्याधि निश्चित थी, मंगलवार के अखबार में वायु विकर की बारी आ जाती और बुद्धवार को पत्नी वैमनस्य पत्थर की लकीर के समान खिंच कर सामने आता था। वृहस्पतिवार से यही क्रम पुनः अपनी शाश्वत परम्परा से आरम्भ हो जाता। यह अलग बात थी कि भविष्य की भाषा कुछ बदल जाती थी जैसे किसी दिन उदर-व्याधि की बजाय उदर पीड़ा मेरे भविष्य में रहती तो किसी दिन पत्नी वैमनस्य की अपेक्षा पत्नी कष्ट या गृह-कलह की सुर्खी मेरे भविष्य के मुख पृष्ठ पर प्रकाशित होती थी। कभी-कभी यह सोचकर परेशान होता कि उदर-व्याधि, वायु-विकार जैसी चीजें मेरे भविष्य में क्यों लिखी जा रही हैं जिनका मुझसे दूर-दूर तक कोई संबंध नहीं है। केवल पत्नी-वैमनस्य ही छपता रहे तो अखबारी भविष्य पर मौज से यकीन करता रहूं और कहूं कि अखबार वाले पते की बात खोज निकालते हैं। मैं नहीं अनेक ऐसे पाठक होंगे जो अपने भविष्य में पत्नी वैमनस्य पढ़कर यहीं कहेंगे कि अखबार झूठ नहीं बोलता।

लेकिन उदर व्याधि और वायु विकार के प्रति अविश्वास करता हुआ भी मैं यह सोचकर आश्वस्त हो जाता था कि इन तीन खतरों के अतिरिक्त अन्य किसी चौथी मुसीबत से बचा हुआ हूं। एक दिन अचानक ही मेरे भविष्य में एक नया आयाम जुड़ गया। मंगलवार के दिन, जब कि वायु विकार की बारी थी—मेरे भविष्य में छपा—शत्रु से हानि। मैं भौंचक्का सा रह गया। दृष्टि गड़ाकर एक बार फिर पढ़ा-शत्रु से हानि। मेरी भौंहें तन गई—खोपड़ी के बाल खड़े हो गए। कौन माई का लाल है जो मुझे हानि पहुँचाने की सोच रहा है?

दिमाग दो सौ मील की स्पीड से इधर उधर दौड़कर आया और बोला विद्यालय का प्रधानाध्यापक ही तेरा सच्चा शत्रु है। परसों एक्सप्लेनेशन मांगी थी। कलसस्पैंशल आर्डर पकड़ा देगा। ''ऐसी-तेसी हैडमास्टर की। मैं इसके खिलाफ डिपार्टमैंट को लिखूँगा'', मैंने तिलमिला कर सोचा। पत्नी ने समझाया, ''खामखवाह परेशान होने की जरुरत नहीं। एक्सप्लेनेशम तो आपकी बीसियों बार हुई है और हर बार मामला पॉच-सत रुपये की मिठाई या फल-फ्रूट से रफा-दफा हुआ है, सो इस बार भी हो जाएगा। हैडमास्टर आदमी दिल का अच्छा है, कलम की मार नहीं मारता। किसी और शत्रु के बारे में सोचो।''

बुद्धि दौड़ी और लौट कर हाँफते हुए बोली, ''तुम्हारे दो नंबर के शत्रु सम्पादक लोग हैं। जरूर तुम्हारी किसी न किसी रचना के साथ किसी संपादक ने 'अभिवादन व खेद सहित' की सिलप नत्थी की होगी जो तुम्हें कल मिल जाएगी''।

''सत्यानाश'', मैंने मन ही मन कहा, ''पन्द्रह अगस्त' शीर्षक कविता का निर्णय कल तक आने की उम्मीद थी, लौटेगी।'' ''लेकिन इससे क्या फर्क पड़ता है?'' पत्नी बोली, ''रचनाएं तो आपकी निन्यानवें फीसदी वापस ही आती हैं। पर यह 'शत्रु से हानि' तो बिल्कुल पहली बार छपकर आया है।''

''फिर किस शत्रु की तलाश करूँ और उससे होने वाली हानि से बचूँ? मैंने आतंकित होकर सोचा। तीसरा कोई शत्रु दिखाई नहीं दे रहा था।

खीजकर मैंने अपने माता-पिता को कोसना शुरू किया जिन्होंने 'अ' पर मेरा नाम रख कर मुझे इस झमेले में डाल दिया। 'मेष' राशि पर मेरा नाम निकलवाना क्या जरूरी था जब कि 'मकर' राशि का भविष्य इन दिनों शानदार जा रहा है। 'ज' से मेरा नाम रख देते तो शुभ समाचार मिलते, गुप्त, धन की प्राप्ति होती और प्रेम-सम्बन्धों में सफलता मिलती। पन्द्रह जनवरी को पैदा होने की बजाय चार-छह महीने देर से पैदा होता तो सार भविष्य ही बदल जाता और इस वायु विकार और उदर व्याधि से पीछा छूट जाता।

लेकिन अब तो शाश्वत समस्या शत्रु है। यद्यपि बुद्धवार के दिन कोई हानि नहीं उठानी पड़ी। न तो सस्पैंशन आर्डर ही मिले और न कोई 'अभिवादन और खेद सहित' की स्लिप ही। फिर भी 'शत्रु से हानि' भी अब मेरे भविष्य का अभिन्न अंग बनता जा रहा है और दो-चार दिन बाद किसी भी वार को मेरे भविष्य में छप जाता है। इसलिए प्रयत्न कर रहा हूँ कि कुछ निरापद शत्रु पाल लूँ। जिनसे होने वाली हानि बहुत बड़ी नहीं और भविष्य की सत्यता भी प्रमाणित रहे। मित्रों ने सुझाव दिया है कि 'चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले लो, अ' आदि अक्षरों से जिनका नाम आरंभ होता हो उन्हें शत्रु बनाओ क्यों कि वे भी 'मेष' राशि वाले होकर समान रूप से 'शत्रु से हानि' के शिकार होंगे। कमी भी नहीं है ऐसे व्यक्तियों की, क्यों कि संसार की पूरी जनसंख्या का लगभग बारहवाँ हिस्सा ऐसा मिल जाएगा।

इसलिए आह्वान करता हूँ उन लोगों का, जिनका जन्म तेईस दिसम्बर से बाईस जनवरी के बीच हुआ है और जो मेष राशि के स्वामि बनकर उदर-व्याधि और वायु विकार के शिकार बन चुके हैं और अब 'शत्रु से हानि' के कठिन दौर से गुजर रहे हैं।

आओ मित्रों, एक ही राशि के होकर हम परस्पर शत्रु बनें ताकि होने वाली हानि के खतरों से बच सकें। हानि को हानि से काट दें और शत्रु बनकर एक दूसरे के काम आएँ। अपनी पारस्परिक शत्रुता अपने सुखद भविष्य के द्वार खोल देगी। वर्ना भूल से यदि मकर राशि वालों से शत्रुता हो गई तो लेने के देने पड़ जाएँगे और 'भविष्य दर्शन' हमें कहीं का नहीं छोड़ेगा। एक राशि के होने के नाते एक-दूसरें का लाभ पहुंचाएं, एक-दूसरे के शत्रु बनें और 'शत्रु हानि' के इस कठिन दौर से सुरक्षित गुजर जाएं।


हर रंग में उमंग... कालिंक के संग.
बच्चों के इस खूबसूरत शौक को ज्यादा उभारिए–उनकी कला और कल्पना को और निखारिए–कालिंक रंगों की रंगबिरंगी बहार से। कालिंक उत्तम क्वालिटी के रंग है जो ज्यादा टिकाऊ, ज्यादा चमकीले, ज्यादा सजीले होते हैं। कागज पर फैलते नहीं, और सूखते भी जल्दी है।
सुन्दर रंगों की सुन्दर दुनिया –कालिंक ने सजाई।
Colink OIL PASTEL
Colink
आर्ट मास्टर कलर बाक्स पोस्टर व वाटर कलर
निर्माता
कालिंक इन्डस्ट्रीज
नई दिल्ली-११००१५



''ठीक है मैं बार-बार इस पर विचार करता रहा—पर क्योंकि तुम अपना कार्ड मुझे दे गये थे, मैंने सोचा तुम्हें बताना ही ठीक रहेगा, कि तुम्हारे जाने के बाद क्या हुआ।''

''कुछ हुआ था क्या?''

''कोई और संदेश के बारे में पूछने आया था'' श्री गोवर्धन सिंह ने उसे बताया कि एक लम्बा काला सा व्यक्ति अपने एक नाटे से मित्र के साथ आया था, जिसने उनसे कहा था कि चंदू घंटे ने ही उन्हें भेजा है।

''परन्तु आप संदेश तो उन्हें नहीं दे सकते थे, वो तो आपने पहले ही हमें दे दिया था'' राजू बोला।

''अब तो जो हो गया सो हो गया, फिर भी मुझे बता देने के लिये आपका धन्यवाद'', राजू ने उत्तर दिया।

फोन बन्द कर वह दूसरे लड़कों की ओर मुड़ा। ''कमालहसन और गोवर्धन राय के पास अब हमारे नाम भी हैं यह बात पक्की है कि वे संदेशों और घड़ी के पीछे पड़े हैं। उधर जीटर भी घड़ी हथियाना चाहता था, हो सकता किसी और तीसरे अनजान व्यक्ति ने जिसे हम अभी तक मिले नहीं हैं। घड़ी चुराई हो। यह रहस्य तो बुहत ही पेचीदा और मनोरंजक प्रतीत होता है, काश मैं समझ पाता हम किस चक्कर में फंसे हैं।

श्याम कुछ और संकेतों का पता लगाता है

अगले दिन सुबह श्याम कबाड़ी घर पहुंचने के लिये जल्दी-जल्दी नाश्ता कर रहा था कि फोन की घंटी बज उठी। फोन मिस ब्राउन का था जो वहाँ की स्थानीय लाईब्रेरियन थीं, वे श्याम से पूछना चाहती थीं कि क्या वह आधे दिन लाईब्रेरी में सहायता करने आ सकता है। श्याम लाईब्रेरी में सहायता करने का थोड़े समय का काम करता था। किताबों की मरम्मत, उन्हें उनके ठीक स्थान पर वापिस रखना इत्यादि छोटे-छोटे काम मिस ब्राउन के साथ करता था।

यही कारण था कि वह उन्हें न नहीं कर पाया हांलाकि उसे यह सोच कर बुरा लग रहा था कि राजू और महिन्दर रहस्य की खोज में लगे होंगे। उसने मिस ब्राउन को बताया कि वह बीस मिनट में लाईब्रेरी पहुंच जायेगा, और साईकिल ले कर रवाना हो गया।

मिस ब्राउन ने प्रसन्नतापूर्वक उससे हाथ मिलाया क्योंकि उस दिन उनका सहायक छुट्टी पर था। श्याम तुरन्त काम में लग गया और दोपहर के भोजन तक काम में पूरी तरह फंसा



रहा। मिस ब्राउन ने उससे कुछ देर और रुकने को कहा तो वह रुकने को सहमत हो गया। अपनी मां द्वारा दिये हुए भोजन को जल्दी-जल्दी खा उसने भोजन के बचे समय में कुछ खोज करने की ठानी।

कुछ सोच कर उसने रानी के विषय में सोचना आरम्भ किया परन्तु इसके सिवाय कि खूनी रानी किसे कहा जाता है वह कुछ अधिक पता नहीं लगा पाया, खूनी रानी, 'ब्लडी मेरी' भी हो सकती है परन्तु यह रहस्यात्मक संदेश में कैसे फिट बैठेगी वह समझ न पाया। उसने बाद में इस विषय पर राजू और महिन्दर के साथ बैठ कर ही विचार करने का फैसला किया।

कुछ भी हो, मिस ब्राउन ने उसे पूरी दोपहर काम में उलझाये रखा और जब शाम के पांच बज गये तभी उन्होंने उसे धन्यवाद देकर जाने को कहा। श्याम अपनी साईकिल पर चढ़ कर तेज़ी से माथुर कबाड़ी घर की ओर बढ़ चला। वहाँ पहुंच कर उसने राजू और महिन्दर को अप्रसन्न मन से दफ्तर के पीछे कबाड़ी सामान को ठीक तरकीब से रखते हुए पाया।

''हम सुबह से इसी काम में लगे हैं'' राजू ने श्याम को साईकिल से उतरते देख कर कहा। ''अंकल माथुर आज सुबह ही एक ट्रक भर कर सामान खरीद कर लाये थे और तभी से आंटी ने हमें इसको छांटने में लगा रखा है। हंस और कुणाल की आज छुट्टी होती है इसलिये आज हम अपनी खोज में बिलकुल भी प्रगति नहीं कर पाये हैं'' ''हरी ने तुमसे कोई बात की क्या,'' श्याम ने पूछा।

''केवल एक फोन आया था उसने बताया था कि मि. जीटर ने उसे घेर लिया था और वे जानना चाहते थे कि उसने कल हम लोगों के साथ क्या किया था। उसने हरी को धमकाया था, डर के मारे हरी ने उन्हें बताया कि कल हम कुछ अजीब से संदेश लाये हैं जिनका कोई अर्थ नहीं है। उसने उन्हें घड़ी की चोरी के

विषय में भी बताया, जिसे सुनकर मि. जीटर बहुत गुस्से में प्रतीत हुए।''

''मि. जीटर को कोई ऐसा भेद मालूम है जो हमें नहीं पता, यदि कभी हम इन संदेशों को समझ पाये तो हमें अवश्य समझ आ जायेगा। अच्छा सुनो राजू मुझे कुछ— श्याम बोला,।

''राजू!'' मि. माथुर का स्वर गूंज उठा, ''अरे भई तेजी से काम करो, अभी तक काम खत्म नहीं हुआ। ''अरे श्याम तुम अच्छा हुआ तुम आ गये। तुम सारे सामान की जो माथुर आज लाये हैं लिस्ट बनानी शुरू कर दो, अच्छा सफाई से लिखना, मैं जाती हूं खाना बना लूं।

उन्होंने आ कर एक मोटी से नोट बुक श्याम के हाथ में थमा दी, जो माथुर कबाड़ी घर के स्टौक की किताब थी।

''श्याम लिस्ट हर चीज़ की बुहत होशियारी से बनाना'' वह बोली।''काम खत्म करने पर हर चीज़ करीने से ठीक ठिकाने पर पहुंच जानी चाहिये लड़कों। खाना तैयार हो जाने पर मैं तुम्हें बुला लूंगी''।

ऐसा कहते-कहते वे भीतर चली गईं, श्याम ने दुबारा काम करना शुरू कर दिया। महिन्दर और राजू नई लाई हुई वस्तुओं को रखते जाते थे और साथ-साथ श्याम को लिखवाते जाते थे।

''एक झूलने वाली कुर्सी'' महिन्दर बोला।

''एक झुलने वाली कुर्सी'' श्याम ने नोट किया।

''बाग में काम करने के औज़ारों का एक सैट जंग लगा हुआ'' राजू ने पुकारा।

''बाग में काम करने के औजारों का एक सैट, जंग लगा हुआ'' श्याम ने लिखा।

और इस प्रकार लगभग एक घंटे लड़के काम में लगे रहे, जब कि आखिर में वे सब सामान को सम्भालने में सफल हुए। महिन्दर और राजू थकान से चूर लेट गये श्याम भी थका हुआ तो था परन्तु इस बात को जानने के लिये भी उत्सुक था कि उसकी खोज का संदेश सुलझाने में कुछ लाभ होगा या नहीं।

''सुनो!'' वह बोला, ''क्या आज हम संदेश सुलझाने का कार्य नहीं करेगे?

''मैं तो बहुत थक गया हूं मुझे तो कुछ भी नहीं सूझ रहा'' महिन्दर करहाया, ''श्याम तुम अब चले जाओ और हमें आराम करने दो, मैं तो इस समय रहस्य के बारे में सोच भी नहीं सकता।''

''मैं पूरी तरह नहीं सोच पा रहा'' राजू ने सिर हिलाते हुए कहा ''श्याम हम कल सुबह तक रुक जायें तो ही अच्छा रहेगा।''

''मैं पूरी तरह नहीं सोच पा .हा'' राजू ने सिर हिलाते हुए कहा

''परन्तु मैंने कुछ खोज की है मेरे ख्याल से वह संदेश में अवश्य फिट बैठेगी।''

''संकेत क्या होता है, मैंने तो ऐसा शब्द कभी नहीं सुना।'' महिन्दर बोला।

''हम कम से कम श्याम की बात तो सुन ही सकते हैं'' राजू बोला ''अच्छा श्याम तुम्हें क्या पता लगा है?'' ''आज जब मैं लाईब्रेरी में था तो मैंने खूनी रानी शब्द के विषय में छानबीन की, एक जगह पर मुझे लिखा मिला कि 'मेरी' ब्लडी मेरी के नाम से भी जानी जाती है तथा मेरी क्वीन मेरी भी है। अर्थात् खूनी रानी हो सकता है ब्लडी मेरी के विषय में कहा गया है। यदि वह तुम्हारी नहीं है तो मेरी है। श्याम ने कहा।

''ठीक है ठीक है। श्याम'' राजू बोला, ''आगे बताओ तुम्हारा क्या विचार है''?

''मेरी शब्द अपने के लिये भी प्रयुक्त होता है, तो कहीं संदेश का पहला शब्द

शेष पृष्ठ १२ पर

चंद किस्से फ्लाई ओवरों के

एशियाई खेलों के दौरान यातायात की सुविधा के लिये नई दिल्ली में कई फ्लाई ओवर बन रहे हैं। फ्लाई ओवरों के कारण ट्रैफिक जाम नहीं होते क्योंकि चौराहे कट जाते हैं। एक ओर से आने वाली सड़क दूसरी ओर की सड़क के ऊपर से पुल बनाते हुयी काटती है। दोनों सड़कों पर यातायात बिना रुके चलता है। अब जब इतने फ्लाई ओवर बन ही रहे हैं और भविष्य में भी बनेंगे तो यह फ्लाई ओवर हमारे जीवन का अंग बनेंगे। आइये देखें कि हम अपने जीवन में और कहां-कहां फ्लाई ओवरों का प्रयोग करते हैं।



कोई लड़का टीचर के लिये रोज खीर या फल आदि मां से मांग कर ले जाता है तो समझो वह परीक्षा के प्रश्न पत्र के ऊपर से अगली कक्षा तक पहुंचने के लिये फ्लाई ओवर बना रहा है।



नेता जी को भाषण के दौरान जूते पड़ें तो समझो लोगों ने आश्वासनों के पुल के ऊपर से चमड़े का फ्लाई ओवर मुर्दाबाद रोड से जोड़ने के लिये बनाया है।



नौकरी के लिये कोई तगड़ी एप्रोज लेकर आया है तो समझिये वह और कैंडिडेटों के सिर के ऊपर से कागज का रेडीमेड फ्लाई ओवर फिट कर रहा है।



कोई कर्मचारी काम करने की बजाय बॉस की चमचागीरी करता रहता है तो समझो वह कर्तव्य क्रासिंग के ऊपर से प्रोमोशन मार्ग को जोड़ने के लिये फ्लाई ओवर बना रहा है।



लड़का मां बाप को पूछे बगैर लवमैरिज कर ले तो समझो उसने अपने मां बाप की मोटी दहेज हड़पने की योजनाओं के ऊपर से फ्लाई ओवर बना लिया है।


लड़का बड़ी बहन देखने जाये और छोटी बहन को पसन्द कर ले तो समझो वह अनियमित फ्लाई ओवर बना रहा है।
कई लोग ऐशट्रे नहीं पाते तो दूसरों.के सिर के ऊपर से टोटे का टेम्परेरी फ्लाई ओवर बनाते हैं।
बीबी मां बनने वाली है। और वह अपनी देखभाल के लिये अपनी मां को बुलाना चाहे तो समझो वह सास को दमाद के सिर पर बिठाने के लिये घुमावदार फ्लाई ओवर बना रही है।
यदि ठेकेदार अफसर की बीबी को साड़ी प्रैजेन्ट करता है तो मतलब है ठेकेदार अफसर के ऊपर से साड़ी का फ्लाई ओवर कांट्रैक्ट कॉलोनी की ओर जाने वाले टैंडर क्रासिंग पर से बना रहा है।
अगर कोई लड़का किसी जवान लड़की से सीधे बात न कर उसके छोटे भाई को आइसक्रीम खिला कर वश में कर रहा है तो समझो छोटे भाई को पाइलोन (स्तम्भ) के रूप में प्रयोग कर आइसक्रीम का फ्लाई ओवर बन रहा है जिस पर से गाड़ी प्रेम नगर पहुंचेगी।
कंजूस जीजा छोटी साली के आने पर खूब पैसे खर्च करता है तो समझो जीजा अपनी दरिया दिली का फ्लाई ओवर अपनी पत्नी के ऊपर से साली तक बना रहा है।

पृष्ठ ९ से आगे

'मेरी' तो नहीं है।

''मैं तो केवल एक ही संदेश सुनना चाहता हूं'' महिन्दर बड़बड़ाया ''खाना तैयार है'।

''मेरे विचार से श्याम ने खोज ठीक ही की है ''राजू उठते हुए बोला ''तुम्हारा दूसरा संकेत क्या है श्याम?''

''दूसरा शब्द राय है जो किसी को दी जाने वाली बात है, इसके विषय में भी मैंने बुहत से शब्दकोश देखे हैं। किसी को विनम्रता पूर्वक दी जाने वाली राय एक ऐसी अपनी धारणा होती है जो दूसरे को बताने में उसे बुरी नहीं लगनी चाहिये, तो एक ही शब्द यहां फिट बैठता प्रतीत होता है 'सलाह' अर्थात 'मेरी सलाह' संदेश के आरम्भिक दो शब्द हो सकते हैं।'' श्याम बोला.

दो शब्द कुछ ठीक प्रतीत होते देख राजू अपनी थकान भूल उठ कर बैठ गया. और श्याम से बोला ''अच्छा कोशिश कर देखते हैं कि तीसरा शब्द क्या हो सकता है, संकेत है ''मलिका को हैरानी में मत रहने दो''। अब सोचो भला इसका क्या अर्थ हो सकता है?''

''मलिका को और किन नामों से पुकारा जा सकता है? महारानी, पटरानी! महारानी को हैरानी में मत रहने दो, क्या बात बनी? श्याम बोला.

''यह संकेत कुछ बेकार चक्कर में डालने को लगा दिया होगा। महिन्दर ने कहा।

''नहीं!'' राजू ने कहा, ''मलिका रानी भी तो हो सकती है। ऐसे में है रानी में ' रानी न रहने दें तो रह गया केवल 'है'। अरे वाह शब्द तो 'है' ही होना चाहिये अब संदेश इस प्रकार बना ''मेरी सलाह है''।

''संदेश के आरम्भिक तीन शब्दों से कुछ अर्थ निकलता सा प्रतीत होता है,'' थकान भूल महिन्दर भी उठ बैठा, ''चौथे शब्द का मुझे प्रयास करने दो. संकेत है ''मैं भी नहीं वह भी नहीं।'' यदि मैं भी न रहूं और वह भी न रहे तो 'तुम' इस विषय में क्या कहोगे।''

''तुम' महिन्दर शब्द तो मेरी समझ में 'तुम' कुछ आ रहा है,'' राजू बोला ''देखो संदेश अब, इस प्रकार बनता दिख रहा है, 'मेरी सलाह है तुम, महिन्दर तुमने शब्द अनायास ही ढूढ़ लिया।''

''अब तो हम संदेश के पांचवें शब्द पर पहुंच गये'' श्याम बोला ''संकेत है इसके कीड़े एकांत पसंद करते हैं,'' ऐसे कौने से कीड़े होते हैं जो एकांत पसन्द करते हैं?

''जरा सोचो तो सही!'' राजू ने कहा, ''कीड़ों के विषय में मैंने कई किताबों में लाइब्रेरी में पढ़ा था, परन्तु कुछ समझ नहीं आया, ऐसा कोई कीड़ा किसी किताब में नहीं मिला जो एकांत पसन्द करता हो।'' श्याम बोला।''

''महिन्दर तुम सोचो क्या हो सकता है,'' राजू ने कहा।

''मैं कोई किताबी कीड़ा नहीं हूं, जो इस विषय में कुछ बता सकूं, इस पर तो श्याम ही अधिक प्रकाश डाल सकता है,'' महिन्दर बोला ''किताबी कीड़ा, अरे हां! राजू पढ़ाकू लोगों को किताबी कीड़ा भी तो कहते हैं जाहिर है वे एकांत पसन्द करते हैं। श्याम बोला

''तो संदेश के हिसाब से तो किताब या पुस्तक शब्द ही यहां आना चाहिये,'' राजू बोला ''अब फिर से संदेश को देखते हैं वह बना 'मेरी सलाह है तुम पुस्तक बात कुछ समझ में आई।

''अब तो केवल इस संदेश का एक ही शब्द ढूंढ़ना रह गया 'आंखें खोलो', सोचो आखें खोल कर क्या करना है''? श्याम बोला।

''आंखें खोलो और देखो, क्या देखो शब्द यहां कुछ अर्थ पूरा करेगा? महिन्दर बोला—

''क्यों नहीं अब तो सारे शब्दों के अर्थ पूरे समझ, आते प्रतीत होते हैं,'' मेरी सलाह है पुस्तक देखो'। राजू बोला।

''अरे वाह! हमने तो इस संदेश को पूरा समझ लिया ''महिन्दर खुशी से चिल्लाया। परन्तु दूसरे ही क्षण उसका मुंह उतर गया'' पर इसका अर्थ क्या हुआ, कौन सी पुस्तक देखो पुस्तक है कहां? वह बोला।

''अभी तो हमें दो संदेश और सुलझाने हैं, जब हम उन्हें—राजू कह ही रहा था कि उसकी आंटी का स्वर सुनाई दिया।

''लड़कों खाना तैयार है आ कर ले लो''।

''इसका मतलब हुआ अब हमें यह काम बन्द करना होगा'' राजू अनमना सा बोला ''पर कोई बात नहीं मेरे विचार से कल जब हम ताजे दिमाग से काम करेंगे तो अधिक आसानी से सोच पायेंगे।''

और इसके साथ ही तीनों लड़के खाना खाने के लिये चले गये।

मदद की पुकार—

खाना खाते समय लड़के अभी-अभी सुलझाये हुए संदेश के अर्थ के विषय में ही विचार विनिमय करते रहे। संदेश में पुस्तक देखने का संकेत है, परन्तु कौन सी पुस्तक? वह मिलेगी कहां?

''क्या इसका संकेत बाईबल की ओर हो सकता है?'' महिन्दर ने पूछा ''बाईबल को बहुत से लोग अच्छी पुस्तक मानते हैं?''

''नहीं मेरा ऐसा ख्याल नहीं है'', राजूने

बन्द करो बकवास



कुछ और मिठाई प्लेट में लेते हुए कहा। ''हालांकि ऐसा हो सकता है दूसरा संदेश सुलझा लेने पर ही कुछ मालूम होगा''।

''आजकल तुम लोग क्या काम कर रहे हो'' माथुर साहब ने खाना खाते खाते पूछा। अंकल हमारे पास कुछ रहस्यमय संदेश हैं जिनको समझना है अभी तो हम केवल शुरुआत ही कर पाये हैं'' राजू ने उत्तर दिया।

''अरे! तुम लड़के और तुम्हारे रहस्य और क्लब'' मिसेज माथुर ने महिन्दर को केक का एक और टुकड़ा देते हुए कहा ''मैं तो कहती हूं, अच्छा है मैं तुम्हें कुछ काम करने को दे देती हूं जिससे तुम कुछ देर खुली हवा में तो रहते हो अन्यथा तुम लोग तो सारा दिन अन्दर ही घुसे रहो।''

लड़कों ने क्लब की शुरुआत पहेलियों के हल ढूंढ़ने से की थी इसलिये इनके 'तीन जासूस' बन जाने के बाद भी मिसेज माथुर का विचार था कि ये लोग पहेलियों के हल ही निकालते रहते हैं।

''अच्छा आंटी, अब मैं आज कुछ भी नहीं सुलझाऊंगा, आपने सारा दिन हमें बाहर बाग में खुली हवा में रखा था और आज मैं जल्दी ही सोऊंगा''। राजू ने उबासी लेते हुए कहा

महिन्दर ने भी उबासी का साथ देते हुए कहा, ''धन्यवाद आंटी आपने बहुत ही अच्छा खाना खिलाया, परन्तु अब मुझे क्षमा कीजिये ताकि मैं जल्दी से घर पहुंच बिस्तर में घुस जाऊं।''

महिन्दर और श्याम दोनों ही गुड़नाइट कर चल दिये कुछ दूर साथ-साथ जाने के बाद दोनों अपने-अपने घर की ओर चल दिये।

उन दोनों में से किसी ने भी अपना पीछा करती धीरे-धीरे आती वैन को नहीं देखा, लड़कों के अलग-अलग होने पर वैन श्याम के पीछे हो ली।

और इस बीच राजू अपनी आंटी का हाथ बटा रहा था परन्तु साथ-साथ उबासियां भी लिये जाता था।

''अरे राजू ? लगता है तुम बहुत ही थक गये हो, जाओ ऊपर जा कर सो जाओ!''

राजू खुशी से जा कर बिस्तर पर गिर गया, परन्तु बिस्तर पर लेटते ही उसे फिर रहस्यमय संदेशों का ख्याल आ गया।

''मेरी सलाह है तुम पुस्तक देखो'' यही हमारा पहला संदेश है। कौन सी पुस्तक? क्या दूसरे संदेश से इसका कुछ पता चलेगा। उसने दूसरे संदेश को याद करने का प्रयास किया। जितना-जितना वह संदेश के विषय में सोचता नींद उससे उतनी ही दूर भागती जाती थी, यहां तक कि उसने सोने के पहले दूसरे संदेश को समझने का प्रयास करने का फैसला किया।

कपड़े पहन वह नीचे चला गया, उसके अंकल और आंटी बैठे टलीविजन देख रहे थे राजू को देख कुछ अचम्भित से हो गये।

''अरे राम! राजू मैं तो सोच रही थी तुम सो गये हो'' उसकी आंटी ने कहा।

''मुझे कुछ ध्यान आ गया था, एक किस्म की पहेली ही समझो! मैं उसे कबाड़ी घर के आंगन में भूल गया था उसे लाकर एक बार देखना चाहता हूं फिर सोऊंगा।'' राजू ने उत्तर दिया।

''ध्यान रहे अपना दिमाग न खराब कर लेना इन उल्टी सीधी पहेलियों से।'' मि. माथुर बोले। कबाड़ीघर के अहाते की ओर राजू लम्बे-लम्बे कदम रखता हुआ अग्रसर हुआ, दरवाजे पर ताले लगे हुए थे परन्तु राजू ने अपनी जरूरत के लिये अपना ही रास्ता बना रखा था, वह चटकीले रंगों से पेंट हुई बाढ़ के साथ-साथ चलता रहा जब तक हरे रंग से रंगे दो बोर्डों के निकट नहीं पहुंचा। यहीं पर एक छोटा सा अन्दर घुसने का रास्ता था। जिसे तीन जासूस लडके हरा गेट कहते थे।

हरागेट तीन जासूसों के बहुत से गुप्त रास्तों में से एक था जिससे वे कबाड़ी घर के अहाते में घुसते थे। राजू सिकुड़ कर इस गुप्त द्वार से भीतर घुसा यह वर्कशाप के विशेष कक्ष में पहुंचता था।

फिर वह प्रिंटिंग प्रेस की ओर बढ़ा जहां पर एक लोहे की ग्रिल को सरका कर टनल टू के द्वार पर पहुंच गया। टनल टू के भीतर घुस उसने ढकने वाला दरवाजा खोला तथा दफ्तर में घुसा।

वह गुप्त संदेशों को दफ्तर में रखी मेज की दराज में रख गया था, बत्ती जला उसने संदेश निकाले, पहला संदेश जिसमें लिखा था ''मेरी सलाह है पुस्तक देखो'' को उसने एक ओर रख दिया। दूसरा संदेश जो महिन्दर और वह गोवर्धन राय से लाये थे, को मेज पर फैलाया।

देखने से तो संदेश बहुत ही रहस्यमय प्रतीत होता था उसकी छः पंक्तियां इस प्रकार थीं—

''कमला खरे से सौ हजार छीन लो।''
''मेंढ़क का खुला भाग पकड़ो।''
''जिस जगह दुनिया है।''
''हिल मत! स्थिर का दुगना करो।''
''आवाज प्रतिध्वनित होती है।''
''हैट का सिरा काम में लाओ।''

(क्रमशः)

मदहोश





आपस की बातें

चचा बातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें

गुरमीत सिंह मीता, नई दिल्ली : यदि चूड़िया राशन कार्ड पर मिलने लगें तो?

उ० : बेशर्म बन कर हम और आप भी राशन कार्ड लिये लाईन में खड़े नज़र आयेंगे.

इकबाल अहमद, बेख़बर, बम्बई : एक हसीना के पीछे परेशान हूं. वह मुझे लिफ़्ट नहीं देती. बताइये क्या करूं?

उ० : इस से पहले कि उस के घर वालों को ख़बर हो बेख़बर जी और आप की हालत एम्बुलैंस से लिफ़्ट लेने वाली हो जाये, आप कहीं दो गज़ ज़मीन का इन्तज़ाम कर लीजिये, ताकि बाद में यह न कहना पड़े.

दो गज़ ज़मीन भी ना मिली कूये यार में.

जसबिंदर एस. बिद्र, डोंगरगढ़ : चाचा जी, इंसान अपनी नज़र से कब गिर जाता है.

उ० : जब वह ईमानदारी से अपने कर्मों का खाता खोल कर बैठता है.

केवल प्रकाश, दुआ, काशीपुर : मच्छर शास्त्रीय संगीत के रिकार्ड कानों के पास क्यों बजाते हैं?

उ० : क्यों कि वे आंखों के सामने डिस्को डांस करें तो लोग फ़्लिट की पिचकारी ले कर उन के पीछे दौड़ लेते हैं।

कामेश कुमार राजपूत, जबलपुर : चाचा जी, कौन सी सुन्दरता अधिक आकर्षित करती है, रूप की या गुणों की? और इन में कौन स्थाई है?

उ० : गुण भरे रूप की. और दुनिया में स्थाई कुछ भी नहीं है माई डीयर भतीजे, भगवान के नाम के सिवा. एक शायर ने कहा है:

ज़मीं खा गई आसमां कैसे-कैसे.

प्रहलाद जसवानी, कृष्णा कन्हैया, मण्डला : चाचा जी, मनुष्य अगर झूठ बोलना छोड़ दे तो क्या हो?

उ० : सच बोलने वाले सड़कों पर पिटमारे हो कर मारे-मारे फिरें और उनकी कमाई मारी जाये.

एम. एन. चुटे, देवपुर, धुलिया : दिन ढल जाये पर रात न जाये.'' इसका क्या मतलब है?

उ० : इस का मतलब एक शायर ने इस शेर में बताया है:

हम इन्तज़ारे यार में जागे तमाम रात,
अच्छे भले थे इश्क ने उल्लू बना दिया.

अनिल के. मारकन्डे, राजेन्द्र नगर : डीयर अंकल, पति पत्नी के बीच बच्चा आ जाने पर उन दोनों का प्यार कम क्यों हो जाता है?

उ०: कम नहीं होता अनिल भतीजे बढ़ जाता है. अगर हमारे और हमारी श्रीमती जी के बीच मुन्ना न आता तो क्या हम अपने सर की यह हालत बनाये जाने पर भी श्रीमती जी को चाहे जाते?

अनिल कुमार गुप्ता, तपकरा : अंकल जी, आप दीवाना में जितने हंसमुख लगते हैं, क्या प्राईवेट लाईफ़ में भी इतने ही हंसमुख हैं?

उ० : प्राईवेट लाईफ़ को आप इस शेर जैसा समझिये:

अपने ग़म को भी खुशी का मरतबा देना पड़ा,
कसरते ग़म पर भी रसमन मुस्कुरा देना पड़ा.

अशोक जौहर ''गगन'', देहरादून : जब किसी प्रश्न का उत्तर आप से बन नहीं पड़ता तो आप हमारे पत्रों का बेड़ा क्यों गर्क कर देते हैं?

उ० : बेड़ा गर्क क्या करेंगे, हमने तो किसी की लुटिया तक नहीं डुबाई आज तक. किसी प्रश्न का उत्तर न दे पायें तो हम खुद आंसुओं में डूब जाते हैं.

वेद प्रकाश, 'अमित', घौण्डा, दिल्ली : माई डीयर अंकल, अगर फ़िल्म ''शोले' में गब्बर सिंह का रोल आप को मिल जाता, या फ़िल्म कुरबानी में ''आप जैसा कोई'' आप की आवाज़ में होता, तो अमजद खां, और नाज़िया हसन क्या करते?

उ० : उन दोनों की बात ही क्यों करते हैं. उन के साथ आप भी हमारे रोल पर, और हमारी आवाज़ पर, या तो तालियां पीटते, या अपना सर पीटते.

ओम प्रकाश भाटिया, पहाड़ी धीरज : प्रिय चाचा जी, क्या आप का कोई नाम नहीं है, जो आप को कोई नाम से नहीं पुकारता है?

उ० : यही नाम है, और नाम का महत्व भी कितना है! हमें परेशानी तब होगी जब कोई कहेगा, दुनिया में तुम्हारा कोई काम नहीं है.

रविन्द्र सिंह सिडाना, नई दिल्ली : चाचा जी, यदि आप को एक दिन के लिये प्रधानमंत्री बना दिया जाये तो सब से पहले आप क्या करेंगे?

उ० : दूसरे दिन प्रधानमंत्री बने रहने के लिये दूसरों की टांगें खींचनी शुरू कर देंगे.

रवि भाटिया, शंकर रोड मार्किट : मैं शादी करना चाहता हूं. क्या मेरे लिये लड़की ढूंढ़ देंगे?

उ० : आप अंधे से रास्ता पूछ रहे हैं रवि भतीजे. जिसने आंखें होते हुये दूध में मक्खी निगली हो उस पर कितना भरोसा कर सकते हैं आप?

राम अवतार, अग्रवाल, खतौली : चाचा जी, कृपया अपना एक फ़ोटोग्राफ भेज दें. मैं उसका क्या प्रयोग करूंगा इसका अनुमान आप लगा ही सकते हैं?

उ० : दीवाना में छपी हमारी तस्वीर का लोग क्या दुरुपयोग करते हैं, हम आज तक इसका अनुमान नहीं लगा पाये.

सुरेश कुमार मंगवानी, खण्डवा : चाचा जी, यदि ईश्वर आप पर दयालू हो और आप से कहे कि जो मांगना है मांग लो, तो आप क्या मांगेंगे?

उ० : दीवाना के लाखों परवानों की खुशहाली. और अपने लिये बस इस शेर वाली बात:

दिल दे तो इस मिज़ाज का परवरदिगार दे,
जो रंज की घड़ी भी खुशी में गुजार दे.

निन्दी वीना, सोनिया, कपूरथला : अगर आप के घर में उल्लू घौंसला बना ले तो?

उ० : हम मान जायेंगे कि एक म्यिान में दो तलवारें समा सकती हैं. क्यों कि हम भी तो आखिर अपने घर में समाये हुये हैं.

मोहनलाल शर्मा, करनाल : किसी को फंसाने के लिये पैसा चाहिये और किसी को फंसाने के लिये जाल. आप को फंसाने के लिये क्या चाहिये?

उ० : दीवाना का मूल्य. केवल डेढ़ रुपया.

मुहम्मद इलियास, मुजफ्फरपुर : ''नेकीकर दारिया में डाल''. इसका क्या मतलब है?

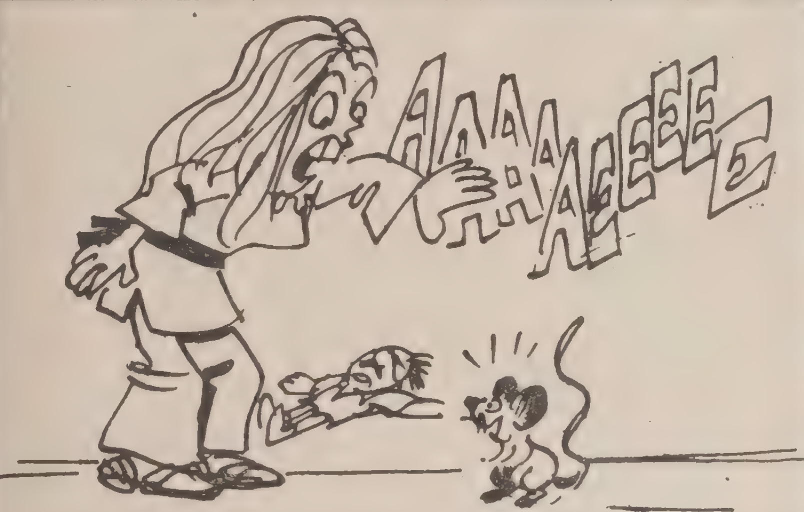
उ.: पता नहीं क्या मतलब है. पर इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं है कि आप को कहीं नेक दिल चाचा बातूनी मिल जाये तो आप उसे पकड़ कर दारिया में डाल दें.

आपस की बातें
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

ऐसा क्यों या कैसे?



किसी की आंखें लड़ती हैं तो कहा जाता है आंखें चार हो गई। जब एक काना आंखें लड़ाता है तो यह क्यों नहीं कहा जाता कि उसकी आंखें तीन हो गयीं? क्या प्यार गणित का दुश्मन है?



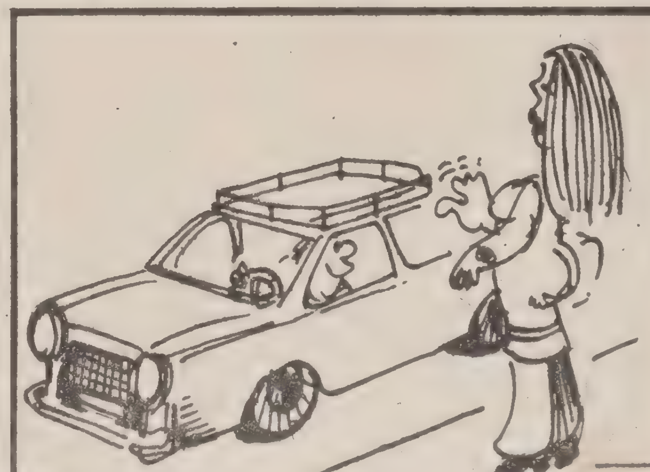
जब कोई लड़की जूडो कराते सीखती है तो वह गुंडे-मुश्टंडों से डरना छोड़ देती है लेकिन तोले भर के चूहे से डरना जारी क्यों रखती है?



जब आप मम्मी को बाजार से अंडे लाकर देते हैं तो वह खुश होती हैं लेकिन जब परीक्षा से आप अंडे लेकर आते हैं तो वह नाराज क्यों होती हैं?



कोई आदमी यह नहीं मानता कि वह गधा है लेकिन जब कोई लड़की उसे घास डालती है तो उसे खाने के लिये वह क्यों लपकता है?



लड़का लड़की को लिफ्ट देना चाहे तो उसके पास कार या मोटर साइकिल होना जरूरी है लेकिन लड़की बगैर कार या स्कूटर के ही लड़कों को लिफ्ट दे सकती है

विश्व की अजीब वसीयतें



दुनिया में हर तरह के लोग होते हैं. कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो जिन्दगी भर रोते और दूसरों को रुलाते रहते हैं. कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो अपने मरने के बाद भी दुनिया वालों को हंसने के लिए कुछ दे जाते हैं.

बुढ़ापे में लोग अक्सर अपनी दौलत के बारे में वसीयत करते हैं. कुछ ऐसी भी वसीयतें सुनने में आई हैं, जो सुनने और देखने में वसीयत से ज्यादा 'मजाक' नजर आती हैं.

कुछ मरने वाले ऐसी-ऐसी अजीब और दिलचस्प वसीयतें छोड़ गये हैं कि आज लोग उनके नाम तो भूल चुके हैं, लेकिन उनकी वसीयतें आज भी जीवित हैं.

अगर हम वसीयत करने वालों को मसखरा मान लें, तो हमें यह भी मानना पड़ेगा कि उनकी ये वसीयतें, उनकी जिन्दगी का आखिरी मजाक थीं.

अब पढ़िये कुछ ऐसी ही वसीयतों के बारे में इन्हें 'मजाक' मत मानिये, ये एकदम सच जानकारियां हैं.

'अमेरिका' का एक व्यक्ति अपने दफ्तर में काम करने वाली महिला के नाम १०० पौण्ड की रकम इसलिए छोड़ गया था कि उसकी हस्तलिपि उसे बहुत पसंद थी.

'हालीवुड' की एक अभिनेत्री ने अपनी वसीयत में एक लड़के को १ पौण्ड कुकुरमुत्ता खरीद कर देने की बात कही थी, जिस लड़के ने उससे कभी कहा था कि उसे कुकुरमुत्ते का शाक बहुत पसंद है.

'न्यूयार्क' के एक व्यक्ति ने अपने वसीयतनामे में लिखा—''मैं अपनी पत्नी को वसीयत में १ डालर देता हूं और अंतिम समय यह बता देना चाहता हूं कि मैं मूर्ख नहीं था, जैसा कि वह सोचा करती थी. मैं अपने बेटे को यह वसीयत करता हूं कि वह कमाये और खाये. वह ३५ वर्ष से यह झूठा स्वप्न देखा करता था कि मेरी संपत्ति से मौज उड़ाये. मैं अपनी बेटी को १ लाख डालर देता हूं. उसको इसकी आवश्यकता थी मैं अपने मोटर ड्राइवर को अपनी कार देता हूं, जिसे तोड़ने फोड़ने की वह बराबर कोशिश किया करता था. मैं चाहता हूं कि उसकी यह आदत छूट जाये. मैं अपने नौकर को अपने सारे कपड़े दे रहा हूं वह अब उनका खुलकर इस्तेमाल करे. अब तक वह उन्हें चोरी-चोरी पहना करता था.''

'लंदन' के एक व्यक्ति ने १ लाख पौण्ड छोड़कर यह वसीयत की—''मेरी मृत्यु के बाद १० वर्षों के अंदर जिस औरत के सबसे अधिक बच्चे पैदा हों, उसे उक्त रकम दी जाये.''

१० वर्षों के अंदर ३ महिलाओं ने अपने को वसीयत की रकम का हकदार बताया. उन तीनों के १० वर्ष में ९-९ बच्चे हुए थे. अदालत ने वह रकम तीनों में बराबर-बराबर बांट दी.

ये तो रहे कुछ गुमनाम लोगों के वसीयतनामे. अब आप कुछ नामधारी लोगों की वसीयतें पढ़िये।

'फिनलैंड' के एक अमीर आदमी 'येपरदांत्रे' को जिन्दगी भर यह अरमान रहा कि लोग उसे एक पहुंचे हुए जादूगर के रूप में स्वीकार कर लें. मगर अफसोस कि उसने जब भी किसी को अपना जादू का करतब दिखाया, पकड़ लिया गया.

जनता को प्रभावित करने के लिए वह कहा करता था—''मैं शैतान का छोटा भाई हूं. शैतान मेरा बड़ा भाई है. मैं जब भी जो काम चाहूं, शैतान से करा सकता हूं.''

लोग उसके इस 'दावे' का भी मजाक उड़ाते रहे. जनता पर प्रभाव जमाने की आखिरी कोशिश वह इस दुनिया से जाते जाते एक वसीयत के रूप में कर गया.

उसने अपनी वसीयत में लिखा—''चूंकि शैतान उसका बड़ा भाई है, इसलिए उसके बाद, उसकी सारी जायदाद और दौलत का मालिक शैतान को बनाया जाये.''

मगर सवाल यह उठा कि शैतान को ढूंढ़ा जाये तो कहां ढूंढ़ा जाये? कई लोगों ने नकली शैतान बनकर दौलत को हड़पना चाहा. आखिर 'येपरदांत्रे' की सारी दौलत सरकार के कब्जे में चली गई.

'फ्रांस' के 'लियोमोशे' नामक वकील ने अपनी वसीयत में अपनी सारी दौलत पागलखाने के नाम कर दी. उसके रिश्तेदार अपना सर पीटकर रह गये. वकील महोदय ने अपनी वसीयत में लिखा—''मैं वकालत के पेशे को पागलपन ही समझकर जीवन

भर अपनाये रहा.''

'फ्रांस' के ही एक दार्शनिक 'जेरी बेंथम' ने अपनी वसीय़त में लिखा—''मेरे मरने के बाद, मेरी खाल उतार कर, उसमें भूसा भर दिया जाये. कपड़े पहनाकर मेरे शव को कुर्सी पर इस तरह बैठा दिया जाये, जिस तरह मैं सोच विचार करने के समय बैठा करता हूं यानी मेरा सिर, मेरे घुटनों के बीच हो.''

जरा सोचिए, भला इतने महान् दार्शनिक की अंतिम इच्छा को भला क्यों न माना जाता ?

'लंदन' के एक प्रसिद्ध व्यक्ति 'फिलिप थिकनी' ने मरते समय अपनी वसीयत में लिखा था—''मेरे मरने के बाद, मेरे सिर को पूरी तरह घोट दिया जाये. बहुत ज्यादा बाल तो नहीं निकलेंगे, लेकिन जितने भी निकलें, उन्हें मेरे बेटे को दे दिया जाये. सरकार की तरफ से उसे यह आदेश हो कि वह रोज सुबह बिस्तर से उठकर, उन बालों को देखा करे. मेरा बेटा दुनिया के हर बूढ़े और गंजे आदमी को 'सनकी' समझता है. मेरे बालों को देखकर, वह याद करेगा कि आदमी तब तक अक्लमंद नहीं बन सकता, जब तक कि वह गंजा और बूढ़ा न हो जाये.''

'अमेरिका' के प्रसिद्ध अरबपति व्यापारी 'स्टूट विलियम' को जितना 'प्यार' अपनी पत्नी से था, उससे कहीं अधिक 'प्यार उसकी पत्नी सोने से करती थी. वह चाहता था कि उसकी मृत्यु के बाद भी, उसकी पत्नी को 'सोने' की कमी न महसूस हो. अतः वह अपनी वसीयत में लिख गया—''मेरी जायदाद में से हरसाल मेरी प्यारी पत्नी को इतना 'सोना' दिया जाये, जितना कि उसका वजन हो.''

अदालत ने यह वसीयत स्वीकार तो कर ली, लेकिन यह फैसला किया गया कि चूंकि जायदाद की आमदनी 'सीमित' है और 'विलियम' महोदय की पत्नी हर साल मोटी होती जा रही हैं, इसलिए उसका वजन एक बार हमेशा के लिए कर लिया गया, ताकि हर साल 'मिसिज विलियम' को एक ही वजन के बराबर 'सोना' मिले.

'अमेरिका' के ही 'फिल्डािल्फिया' नामक व्यक्ति की बहुत ज्यादा सिगार पीने की आदत थी. उसकी पत्नी उसे घर पर सिगार नहीं पीने देती थी. उसने अपनी पत्नी को लाखों से ज्यादा की रकम इस 'शर्त' पर देने के लिए कहा कि उसकी पत्नी कम से कम पांच सिगार रोजाना पिये.

उसकी पत्नी ने अदालत से कहा—''मेरा पति सनकी है''. मगर अदालत में 'फिल्डिल्फिया' के डाक्टरों ने बताया कि उसका पति मानसिक रुप से बिल्कुल 'ठीक' है. अतः अदालत ने फैसला दिया कि यदि 'मिसेज फिल्डिल्फिया' अपने पति की दौलत प्राप्त करना चाहती हैं, तो उन्हें सिगार पीने की आदत डालनी ही पड़ेगी.

बेचारी पत्नी को दौलत प्राप्त करने के लिए अपने पति की 'शर्त' माननी ही पड़ी!

'स्काटलैंड' के नबाब 'ऐडवर्ड वुड' को सिर्फ कुत्तों से प्यार था. नबाब ने सौ खूंखार कुत्ते पाल रखे थे. उन्हीं कुत्तों के साथ वह रहता था और उन सबको साथ लेकर ही सोता था.

उसने अपनी वसीयत में लिखा—''मेरी सारी धन संपत्ति का मालिक उस आदमी को बनाया जाये, जो मेरे कुत्तों के साथ रहना और सोना पसंद करे.''

नबाब के बहुत से रिश्तेदार तो इस वसीयत को सुनकर ही कांप उठे. उन खूंखार कुत्तों के साथ रहने और सोने की बात तो दूर रही, उनके डर से कोई भी रिश्तेदार नबाब साहब के घर के करीब जाने का भी साहस नहीं करता था.

जब कोई भी 'हिम्मतवाला' सामने न आया, तो पूरी दौलत और नबाब के कुत्ते सरकार के कब्जे में चले गये.

पिछले ही साल यानी १९८० में 'स्वीडन' में एक बिल्ली मरी, बिल्ली ने अपने पीछे ढाई लाख की जायदाद छोड़ी. अब आप कहेंगे कि यह 'मजाक' है. मगर साहब! यह 'मजाक' नहीं, बल्कि 'हकीकत' है. वैसे है अजीब किस्सा!|

किस्सा इस तरह है कि कुछ साल पहले (१९७४ या १९७३ में) जब उस बिल्ली की मालकिन का स्वर्गवास हुआ, तो उसने अपनी वसीयत में लिखा कि उसकी सारी जायदाद की मालिक उसकी बिल्ली होगी.

इस जायदाद पर बिल्ली हर साल ७५० रूपये टैक्स देती थी. मरने के बाद इस 'अमीर' बिल्ली के कफन दफन पर कुल ११ रुपये खर्च आये थे.

'ब्रिटिश कोलंबिया' के 'विक्टोरिया' शहर के 'बेंजामिन विलियम' नामक एक 'पढ़ाकू' आदमी ने लाइब्रेरी को अपनी दो सौ किताबें वसीयत में दे दीं। मजेदार बात यह कि उसने यह 'शर्त' रख दी कि ये किताबें सिर्फ उन लोगों को पढ़ने को दी जायें, जिनके हाथ साफ सुथरे हों, ताकि किताबों के पन्ने साफ रहें.

लाइब्रेरी के प्रबंधकों को इस 'शर्त' के कारण काफी कठिनाइयां उठानी पडीं. लाइब्रेरी में आने वाला जो भी आदमी उन किताबों में से किसी को पढ़ना चाहता तो सबसे पहले लेंस से उसके हाथों का 'निरीक्षण' किया जाता. यदि हाथ गंदे होते, तो हाथों को साबुन से धुलवाया जाता. इसके बाद ही उस आदमी को उन किताबों में से कोई किताब दी जाती.

'अमेरिका' की ही एक वसीयत का किस्सा और भी पढ़िये 'अमेरिका' के 'कर्नाटक' शहर की एक अमीर विधवा 'मिसिज पेल' ने अपने पीछे यह वसीयत की—''मेरे मरने के बाद, मेरी २ करोड़ की दौलत सिर्फ उन रिश्तेदारों में बांटी जाये, जिन्होंने शराब या सिगरेट को हाथ भी न लगाया हो.''

मगर अफसोस कि 'मिसिज पेल' के रिश्तेदारों में सिर्फ एक इंसान ऐसा निकला, जो इन 'शर्तों' पर 'पूरा' उतरा, और वह था एक ५ साल का बच्चा।

और अब अंत में, 'इंगलैंड' की 'मिस एलिजाबेथ' ने अपनी कविता में अपनी इच्छा को वसीयत का रूप इस तरह से दिया है—''मैं चाहती हूं कि जब मेरी जिन्दगी की नदी सूख जाये (यानी मेरी मृत्यु हो जाये), तो मेरे शरीर को जलाकर, मेरी राख को शहर के बीचोबीच बहने वाले नाले में ले जाकर बहा दिया जाये. और अगर नाले में सर्दी के कारण बर्फ जमी हो, तो उसे नदी पर ले जाया जाये. और अगर नदी भी जम चुकी हो, तो उसे समुद्र पर ले जाया जाये. और अगर समुद्र भी जमा हुआ दिखाई दे, तो उसे वापस मेरे घर पर ले आया जाये. और जो कुआं मेरे घर के पिछवाड़े है, आग जलाकर उसके पानी को पिघलाया जाये. और जब पानी पिघल जाये, तो उसमें मेरी राख को छोड़ दिया जाये.

और उसके बाद, ऐ लोगों! वहीं पर बैठकर तुम सब गर्मी का इंतजार करना. जब गर्मी आ जाये, तो राख को कुएं से बाहर निकालना और उसे शहर के बीचों-बीच बहने वाले नाले में ले जाकर छोड़ आना.''

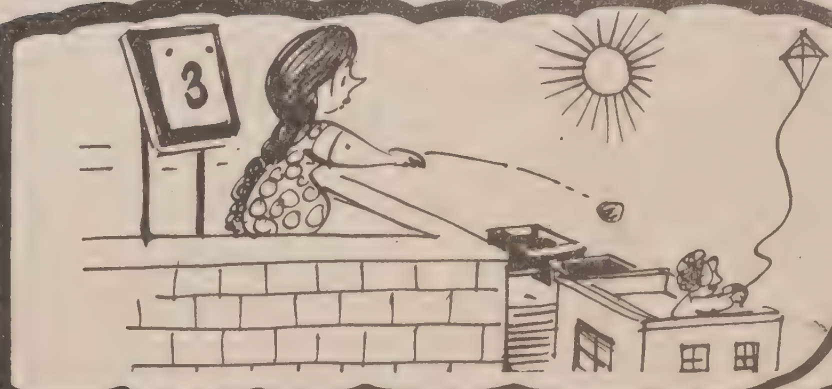
इसी तरह की अंग्रेजी कविताओं में कुछ और भी मजेदार वसीयतें हैं. आशा है कि आप सबको 'विश्व की अजीब वसीयतें' पढ़कर भरपूर आनंद मिला होगा.

—सरल

एशियाई खेल और तुम्हारा तेल

जैसे-जैसे एशियाई खेलों की तरीख नजदीक आती जा रही है और स्टेडियम बन कर तैयार होते जा रहे हैं, एशियाई खेलों का प्रचार तेज किया जा रहा है ताकि लोगों में इसके लिये रुचि पैदा की जा सके। जनता इन खेलों के बारे में ऐसे ही दीवानी हो जाये जैसे बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना हो गया था। लोगों के दिलों में खेलों के प्रति दिलचस्पी पैदा करने के लिये तथा खिलाड़ी भावना पैदा करने के लिये कड़े कदम उठाने की जरूरत है। कुछ नये प्रकार के प्रोत्साहन दिये जाने की आवश्यंकता है।

प्रोत्साहन के कुछ रूप हम यहां पेश-ए-खिदमत कर रहे हैं।



पुराने ढंग के मुहल्लों में जहां छतें आपस में सटी होती हैं लड़के छत पर पतंग उड़ाने जाते हैं तो लड़कियां उनसे आंख मटक्का करने आपनी छत पर आती हैं व लड़कों पर आलू टमाटर फैंकती हैं। लड़कियां अपने निशानों का स्कोर रखें। उन्हें कम-से-कम स्कोर बोर्ड रखने का ही अभ्यास हो जायेगा।



झगड़ालू पत्नियां जमनाजी में डूब मरने की धमकी देने की बजाय एशियाई खेलों के लिये बने स्वीमिंग पूल में डूब मरने की धमकी दें।



यदि कोई सास एशियाई खेलों की ज्वाला से आग लेकर बहू को जलाये तो उसे तंग न किया जाये।



असफल प्रेमी पंखे से फांसी लगाकर मरने की बजाय गोलपोस्ट से लटक कर मरें। और तो कुछ कर न सके मरते-मरते एशियाई खेलों के लिये ही कुछ कर जाओ।



जो प्रेमी पाइप या सीढ़ी के सहारे प्रेमिका के कमरे में जाते हैं उन्हें पोल वॉल्ट का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें। एशियाई खेल समिति ऐसे प्रेमियों के लिए पोल उपलब्ध कराये।


2
3
4
5
6
7
8
जो महान् नारियां छः से अधिक बच्चे पैदा कर चुकी हैं वह घर से बाहर जायें तो बच्चा को टीम नम्बरों वाली शर्टें पहना कर ले जायें एक तो उनके खोने का डर नहीं रहेगा दूसरे खेल भावना व टीम स्पिरेट पैदा होगी।
ट्रैक सूट पहनने पर लड़कों को लड़कियों का पीछा करने या उनके घर के चक्कर लगाने का लाइसेंस मिले।
प्रेम भी एक खेल है। 'पार्कों में 'उन्हीं युगल जोड़ों को बैठ कर प्रेमालाप करने दिया जाये जिन्होंने एशियाई खेलों के प्रतीक वाली टी शर्ट पहन रखी हो।
नेता भाषण देने जाये तो मंच तक जाने का एक ही रास्ता हो। जिमनास्टिक्स की बीम पर से होकर उसे मंच तक जाना पड़े। नेताओं को बैलेंसिंग आ जायेगी, मोटापा कम होगा। कोई गिर कर मर भी गया तो हमारे सिर से एक मुसीबत तो टलेगी ही।
प्रेमी प्रेमिका के बालों में फूल लगाना चाहे तो पांच गज दूर से डार्ट में फूल लगा कर जूडे का निशाना लगाये।
घर में मम्मी पापा में तू-तू-मैं-मैं का मैच हो तो बच्चा अम्पायर का रोल करे। दोनों हद से बाहर होने लगें तो पीला या हरा कार्ड दिखाये।
कोई भिखारी को सिक्का देना चाहे तो वह दस फुट दूर खिंची रेखा से सिक्का फैंक कर भिखारी के कटोरे में डालने का यत्न करे। इससे दिल में खेल भावना जागृत होगी।

क्यों और कैसे

प्र. : जैबरे के शरीर पर काली सफेद धारियां क्यों होती हैं ?

उ० : अफ्रीका के कीड़े मकोड़ों से भरे क्षेत्र में जहां त्से त्से मक्खी जो घोड़े, गधे तथा अन्य ठोस रंग के जंगली पशुओं पर भारी आक्रमण कर उन्हें सोने की बीमारी में घेर लेती हैं जैबरे पर इस मक्खी का प्रकोप अन्य पशुओं की तुलना में बहुत कम होता है। सम्भवतः जैबरे के शरीर की धारियां ही उसकी इस भयानक मक्खी से रक्षा करती हैं और इसी कारण इनका विकास हुआ होगा। जैबरे के शरीर की धारियां मक्खी को धोखा देने में सफल होती हैं।

ब्रिटिश जीवन विज्ञैता श्री जैफरी वाग का विश्वास है कि जैबरे के शरीर पर धारियों का विकास पशुओं को पीड़ित करने वाली त्से त्से मक्खी से बचाव के लिये ही हुआ होगा। उनका मत है कि त्से त्से मक्खी ठोस रंगों की गोल वस्तुओं को भली भांति देख लेती है और इसी कारण उन पर अधिक जोर से आक्रमण करती है परन्तु सफेद काली धारीदार वस्तु को ये मक्खी इतनी अच्छी तरह नहीं चुन पातीं।

अपने इस सिद्धांत की खोज के लिये 'वाग' जिम्बाबवे गये, वहां उन्होंने अपने साथियों के साथ मिलकर पशुओं की पीठ की नक्ल में बड़े-बड़े ड्रमों (बैरल) को सफेद, काला और धारीदार पेन्ट किया। फिर इनमें, बिजली के तार लगा इन्हें ठेलों पर रख झाड़ियों में से निकाला गया। ड्रम पर बैठने वाली हर मक्खी बिजली के करंट से मर जाती थी और इनके, शव एक बरतन में एकत्रित हो जाते थे जिन्हें बाद में गिना गया।

'वाग' ने बताया कि धारीदार मॉडल पर सब से कम मक्खी बैठीं, उनका विचार है कि दूर से काली सफेद धारियों वाले जैबरे का रंग अजीब सा मटियाला दिखाई देता होगा। तो प्रश्न उठता है कि यह पशु मटियाले रंग का ही क्यों नहीं होता ? क्योंकि ठोस मटियाला रंग भी आसानी से पहिचान लिया जाता है, परन्तु धारियां नहीं पहिचानी जातीं। हो सकता है मक्खी जब मटियाला सा रंग देख जैबरे के निकट आती है तो इस पशु का रंग पतली-पतली काली सफेद धारियों में परिवर्तित हो जाता है, जो धारियां अलग-अलग मक्खी को आकर्षित नहीं कर पातीं।

मटियाले और धारीदार के भेद का टेस्ट करने का वाग का भविष्य में पूरा विचार है।

प्र.: क्या मिस्र के पिरामिडों का बड़ा नाप ही इनकी इतनी लम्बी आयु का आधार है ?

उ० : मिस्र के महान पिरामिड संसार के प्राचीन अन्य सात चमत्कारों से भी २००० वर्ष अधिक पुराने हैं। इनमें सबसे बड़ा 'चियोप्स' (cheops) का पिरामिड ४००० वर्ष तक, संसार में मनुष्य द्वारा निर्मित सब से बड़ी इमारत थी । क्या केवल उसका नाप उसका बड़ा होना ही उसकी लम्बी आयु का कारण है ?

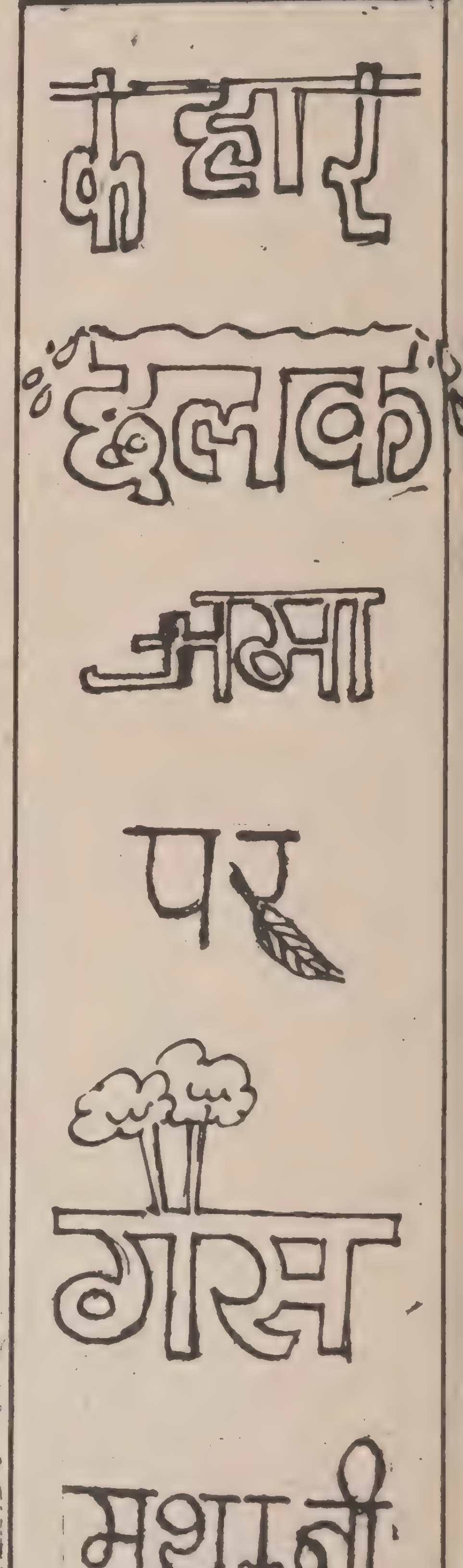
स्मिथोनियन इन्सटीट्यूट सेन्टर आफ अर्थ ऐन्ड प्लेनेटरी स्टडी के डायरेक्टर भूविज्ञेता फरुख एल-बाज का कहना है, ऐसा 'नहीं' है। इस लम्बी आयु का श्रेय इन पिरामिड़ों की आकृति को है । उनके अनुसार रेगिस्तान में भूक्षरण का कारण वहां चलने वाली तेज हवा के साथ उड़ने वाली रेत है। परन्तु पिरामिड़ों से टकराने वाली हवा, पिरामिड के तले से टकरा कर उसके ढाल के साथ-साथ ऊपर की ओर को बढ़ जाती है, यह चक्रवात पिरामिड के चारों ओर तेजी से घूमता है और पिरामिड के ऊपर के सिरे पर पहुंच अपनी नष्ट करने वाली शक्ति के साथ ...त्रा में लुप्त हो जाता है।

इस दृश्य पर कुछ ही समय पहले ध्यान दिया गयाहै। जब एल-बाज और उनके साथियों ने इन प्राचीन पिरामिडों के करीब चक्रवात देखे ।

संभव है प्राचीन मिस्त्रियों को यह न मालूम हो कि पिरामिड की यह आकृति उनकी रेत के इन भयंकर तूफानों से रक्षा करेगी। परन्तु रेगिस्तान में ऐसी बहुत सी आकृतियां देखने में आती हैं और क्योंकि मिस्त्रि माने हुए प्रेक्षक थे उन्होंने अवश्य यह देखा होगा कि रेगिस्तान में कायम रखने के लिये पिरामिड की यही आकृति सबसे उपयुक्त होगी।

एल-बाज ने मिस्र की रहस्यमय नरसिंही मूर्ती स्फिन्क्स का संबंध भी प्राकृतिक यार-डांग से स्थापित किया है । यारडांग पृथ्वी पर उलटाई हुई बोट के समान दिखाई देते हैं। तेज हवाओं के बार-बार इसके तले से टकराने के कारण इसके नीचे जगह बन जाती है । मिस्त्रियों ने पृथ्वी पर उलटाई हुई यह चिकनी आकृतियां देखीं तो उन्हें यह बहुत भली लगीं । उन्होंने सोचा क्यों न 'फ़रोट' का सिर और पैर लगा कर इन्हें सजा दिया जाये । और इस प्रकार यह यारडंग मिस्त्र में कीर्तिस्तम्भ बन गये ।

बोलते अक्षर





नरेश दीपिका गुलाटी,दिल्ली : होठों की सुरखी और अखबार की सुरखी में अन्तर क्या है?

उ० : भूत और भविष्य का अन्तर। अखबार की सुर्खियां कोई घटी दुर्घटना के बारे में बताती और होठों की सुर्खी कहती है किसी के साथ हादसा होने वाला है।

चम्पा लाल, नेपाल : आदमी को शादी करने के बाद और शादी से पहले क्या सोचना चाहिए तथा क्या करना चाहिए?

उ० : शादी से पहले सोचा जाता है चलो किसी पर मर मिटें। और शादी के बाद तो एक ही बात सोचता है ''मारे गये''।

राजेश चुघ, सिरसा : गरीब चन्द जी, मैं आप की तरह काम चोर बनना चाहता हूं। बताइए क्या करूं?

उ० : क्या आप पहले ही कामचोर नहीं हैं? अगर ऐसा है तो चुप रहिये। कभी सरकार छानबीन शुरू कर दे कि यह किसी और देश का नागरिक अवैध रूप से यहां तो नहीं रह रहा है नाम बदल कर।

के. पी. अरोड़ा, काशीपुरः अनपढ़ पत्नी के क्या फायदे हैं?

उ० : प्रेमिका पत्र लिखे तो उसे पढ़ नहीं पायेगी।

लाल भारवानी 'कार्टूनिस्ट', गोपालपुरीः गरीब चन्द जी सेठ इस दुनियां में सबसे खूब सूरत चीज कौन सी है?

उ० : जो चीज हमें हासिल नहीं होती। दूर २ से ही देखने को मिलती है।

प्रदीप इतवारी, नागपुरः गरीब चन्द जी मैं एक लड़की से बेहद प्यार करता हूं लेकिन वह मुझसे नहीं करती, मैं क्या करूं?

उ० : आप अपनी तरफ से एकतरफा प्रेम किये जाइये। इस देश के ९९% प्रेमी यही करते हैं। कोई पूनम ढिल्लो से तो कोई पद्मिनी कोल्हापुर से प्यार करते हैं।

अमर जीत, खुरजाः गरीब चन्द जी, मेरी प्रेमिका रोज नई- नई फरमाइश करती है, मैं तंग आ गया हूं, बताइये कैसे पीछा छुड़ाऊं?

उ० : आपका कोई अमीर दोस्त है तो उससे परिचय करवा दीजिये। वह उसके गले में बंध जायेगी।

छोटे लाल डी. ११ टकरानी, देहरादूनः डीयर गरीबचन्द जी, आप मेरे लिए कृपया दीवाना में एक इश्तहार दें कि मुझे एक ९० साल की घरवाली की आवश्यकता है?

उ० : हम बाल विवाह के विरुद्ध हैं। बूढ़े लोग भी बच्चे ही होते हैं। एक ९० वर्ष की बच्ची की जिन्दगी से हम क्यों खेलें?

कु. सुनीता सिंह, वनस्थली विद्यापीठ (राज.): गरीबचन्द अंकल, मैं आपको फोन करना चाहती हूं, नंबर बतायेंगे?

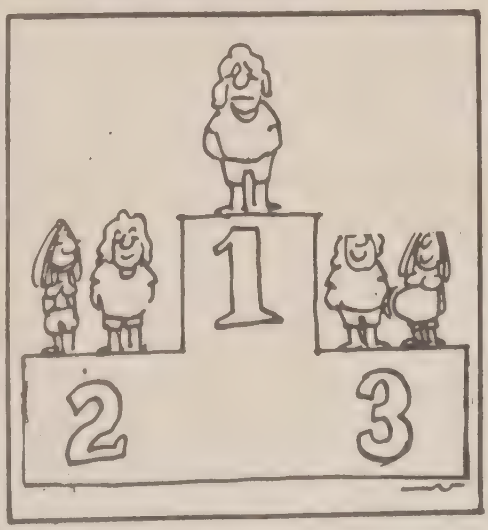
उ० : मेरा नंबर 'रांग नम्बर' है क्योंकि जिसने भी मुझे आज तक फोन किया उसे रांग नम्बर ही मिला।

अनिल कुमार गुप्ता, तपकरा (म० प्र०): गरीब चन्द जी, कहते हैं गरीबों के लिये इस धरती के ऊपर कोई जगह नहीं है. क्या इसीलिये आप धरती के नीचे (बिल में) रहते हैं?

महाशय, गरीबों के लिये तो धरती के ऊपर ही जगह है। धरती के नीचे तो बड़े-बड़े सेठ ब्लैक का माल दबाये बैठे रहते हैं।

सुभाष कश्यप, पालमपुर, हि०प्र०: डीयर गरीब चन्द जी, कहते हैं. मतलब निकालने के लिए गधे को मामा कहना पड़ता है। अगर मामा से मतलब निकालना हो तो?

उ० : भांजा बनना पड़ता है।



नरेन्द्र गुलाटी, लुधियानाः जीवन अधूरा कब रह जाता है?

उ० : जब किसी तरह से भी पूरा न पड़ रहा हो।

प्रेम बाबू शर्मा, बगीची पीर जीः गरीब चन्द जी, कहते हैं, इश्क नाजुक मिजाज होता है, अक्ल का बोझ ढो नहीं सकता। तो कुर्सी से इश्क करने वाले क्या हुए?

उ० : कुर्सी पर पड़ा बोझ।

परमजीत सुलैच, करनालः स्त्री और पुरुष में कौन वफादार होता है?

उ० : दोनों एक ही थैली के चट्टे बट्टे हैं।

रोहित ढांडा, करोल बागः गरीब चन्द जी, अगर कोई लड़की आ कर मुझे कहे आप जैसा कोई मेरी जिन्दगी में आये तो बात बन जाये। तो मुझे क्या कहना चाहिए?

उ०: पहले यह पूछिये कि उसे प्रेमी की जरूरत है या नौकर की।

प्रेमबाबू शर्मा 'सुमन' बगीची पीरजीः गरीब चन्द जी, आदमी दूसरों का हमदर्द कब बन जाता है?

उ० : जब हमदर्द दवाखाने की दवाओं की एजेंसी उसे मिल जाती है।



ओम प्रकाश भाटिया (टीटू) पहाड़ी धीरज : प्रिय गरीब चन्द जी, क्या ऐसा भी प्रश्न है जिसका आपको जवाब नहीं आता?

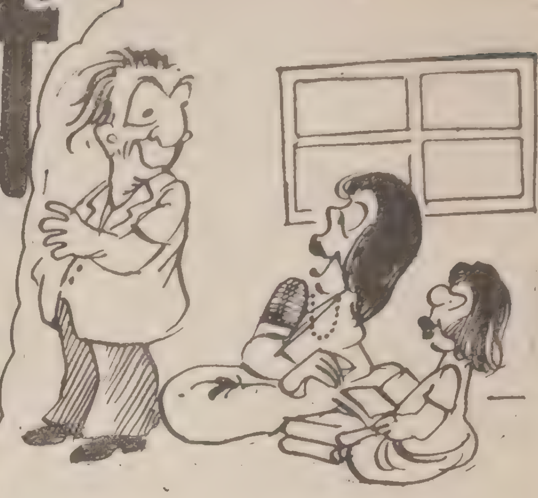
उ० : जवाब तो हर सवाल का है लेकिन इसकी गारन्टी नहीं कि हर जवाब सही हो।

गरीब चन्द की डाक
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

बैंक डकैतियों का नया रूप

आजकल दिल्ली में बैंकों में डाका पड़ना आये दिन की बात हो गयी है। पुलिस का अपराधियों को न पकड़ पाना जले पर नमक छिड़कने वाला काम कर रहा है।

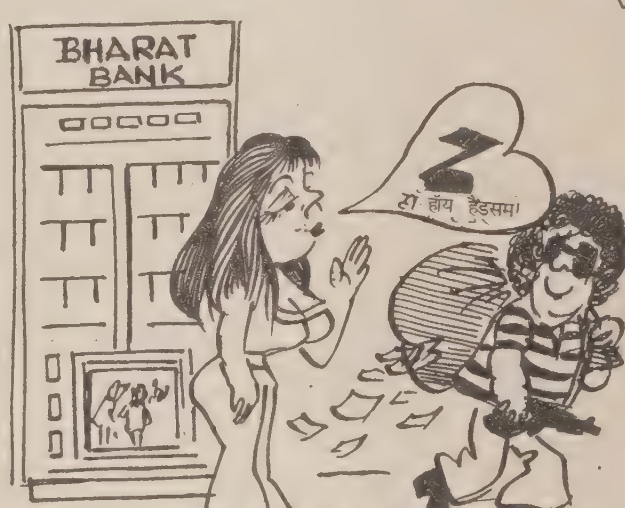
बैंकों पर डकैतियां इसी तरह पड़ती रहीं तो बैंक डकैतियां एक ऐसी सामान्य बात हो जायेगी कि निम्न स्थितियां पैदा हो सकती हैं।



सुना तुमने? मुन्ना कहता है वह बड़ा होकर बैंक डकैत बनेगा। मैं कहती न थी हमारा मुन्ना बड़ा हो कर कुछ कर दिखायेगा।



बैंक कर्मचारियों को डकैतों की पिस्तौलों के सामने हाथ खड़े करने पड़ते हैं। जब हाथ खड़े करने पड़ते हैं तो महिलाओं की बगलें नजर आती हैं। बैंकों की महिला कर्मचारिनें अपनी बगलें एनफ्रेंच से खूब साफ रखना शुरू कर देंगी।



बैंकों में डाके युवा लोग ही डाल रहे हैं। डेटिंग की इच्छुक लड़कियां बैंकों के बाहर खड़ी होंगी। जैसे ही कोई डाका डाल कर निकलेगा वह उसे फंसाने की कोशिश करेगी।

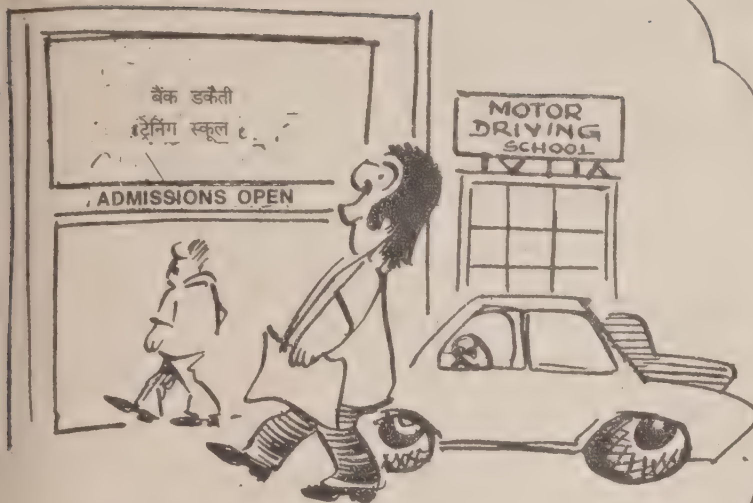


सरकारी बैंक शायद ३०% बैंक कैश पिछड़े वर्गों के लिये सुरक्षित करने की घोषणा करें।

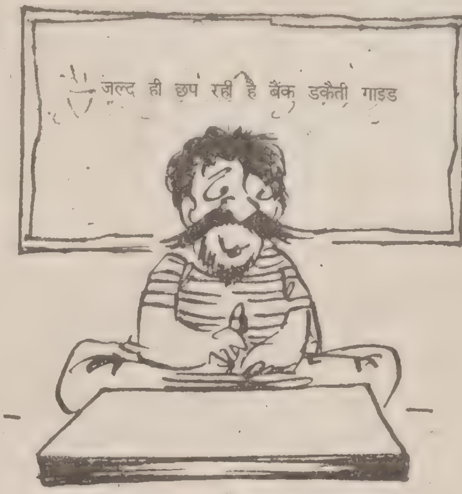
क्या कहा? बैंक में डाका पड़ा है? तुम चिल्ला तो ऐसे रहे हो जैसे किसी ने किसी की जेब काट ली हो।



पुलिस वाले बैंक डकैतियों को महत्व देना ही छोड़ देंगे।



नये बैंक डकैतों के लिये बाकायदा ट्रेनिंग स्कूल खुलें।



गाइड बुकों की श्रृंखला में बैंक डकैती पर भी गाइड बुकें मिलने लगेंगी। कोई पुराना बैंक डकैत लेहाती पुस्तक भंडार के लिये पुस्तक लिखेगा।



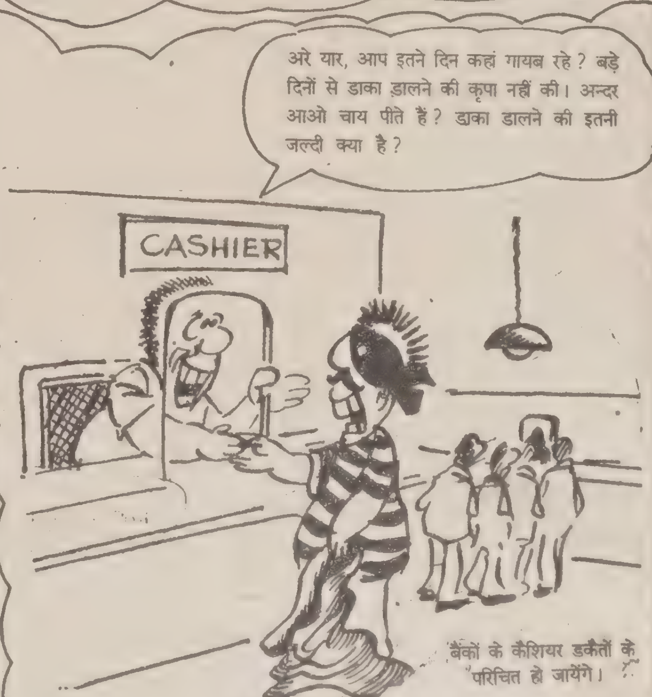
बैंक, डकैतों की सुविधा की लिये अलग सूचना काऊंटर खोले।



बैंक कर्मचारियों को डकैतों के कारण पसीने आते-आते एक समय आयेगा वह पसीना पौंछने के लिये विशेष रूमाल भत्ता मांगने लगेंगे।



बैंकों में डकैतों को भी क्यू में खड़े हो कर अपनी बारी की प्रतीक्षा करनी पड़े।



बैंकों के कैशियर डकैतों के परिचित हो जायेंगे।

लाश की जुबान से ......

—राम राघवेन्द्र सिंह

वह असहाय था। दुनियां की चकाचौंध से अक्सर भ्रमित सा रहता था। 'झूठ' से कोसों दूर रहने की कसम खायी थी। पर सत्यता के बुत को बना नहीं पाया। एक दिन सड़क के किनारे खड़ा एक जुलूस को देख रहा था, तभी किसी समाजसेवी की गोली का निशाना बन गया। कुछ सरकारी लोगों ने उसे चीलघर भेज दिया।

उस असहाय की लाश पोस्टमार्टम की टेबुल पर चित्त लेटी थी। सहसा लाश बोली—''

''डाक्टर क्या तुम्हारी जांच मारने वाले का सही पता लगायेगी?''

''क्या तुम्हारी रिपोर्ट सही होगी?''

''क्या मुझे मारने वाला फंसेगा?''

''क्या निर्णय मेरे पक्ष में होगा?''

''क्या मर्डर होने बन्द हो जायेंगे?''

''क्या तुम रामराज्य लाने की तो नहीं सोच रहे हो?''

लाश अचानक कुछ देर को रुक गयी। डाक्टर के मस्तिष्क पर प्रश्नों की लकीरें खिंच आयीं।

वह लाश फिर से हकलायी—''न, ..., न.... न.... हीं ..... नहीं, नहीं. डाक्टर अगर ऐसा हुआ तो तुम्हारा धन्धा, तुम्हारा व्यवसाय चौपट हो जायेगा। तुम बरबाद हो जाओगे। कहीं बेरोजगार भी न हो जाओ।''

डाक्टर कुछ झेंप गया। लेकिन जल्द ही क्रोध ने उसे ले घेरा। वह बोला—''चुप रहो। याद रखो कि तुम एक लाश हो, मुर्दा हो जिसकी जवान बन्द होती है।''

लाश अब कुछ सहम गयी थी। आहिस्ता से बोली— ''मुझे लाश बनने के पहले तक भी बोलने का मौका ही नहीं दिया गया। जब कभी मौका मिला तो जीभ को गोंद से चिपका पाया और मैं......।''

अब की बार डाक्टर गर्मी पकड़ गया था। उसकी आंखों में खून उतर आया था। वह बोला, ''मेरे हाथ में चाकू है। बहुत तेज धार है इसकी। बकबक बन्द कर, वरना एक ही बार में जुबान काट दूंगा तेरी।''

लाश दुबकी और पोस्टमार्टम के लिये लेटी रही। जांच के दौरान पता चला कि रिवाल्वर की दो गोलियों ने उसके हृदय और फेंफड़ों को छलनी कर दिया था।

मौत का कारण—

''जांच में कुछ।

''कागज पर कुछ।''

और तो और इस बार तो डाक्टर ने लाश की जीभ भी काट दी थी। फिर भी कटी जीभ से ही लाश बुदबुदाये जा रही थी—'डाक्टर तुम्हारे अनुभव को परखने मैं फिर आऊंगी। तब देखूंगी कि तुम्हारी भ्रष्टता में कितनी बढ़ोत्तरी हो गयी है।''

अब तक डाक्टर ने स्वीपर्स को लाश सिलने के लिये बोल दिया था। लाश सफेद कपड़े में बन्द होने पर, डाक्टर ने उसे सील कर दिया और कांस्टेबिल को वापिस दे दी। रिपोर्ट का एक कागज भी कांस्टेबिल को दे दिया जिस पर लाश का नाम, पता और जांच के खाने में मौत का कारण लिखा था

''सुसाइड वाई फायर आर्म (रिवाल्वर) ड्यू टू मेण्टल

डिसआर्डर।''

तरीका—विजय का

—आजाद रामपुरी

एक साहित्यिक समिति के वार्षिक चुनाव सम्पन्न होने थे। वे अध्यक्ष पद के लिये हंसे-फूले खड़े हो गये। मुकाबला बड़ा कड़ा था। वे खड़े तो हो गये थे किन्तु अब उन्हें दिन में तारे नजर आने लगे थे। वे जनमत को अपने पक्ष में करने के लिये कभी तो किसी के सामने गाल फुला-फुला कर हंसते कभी बत्तीसी निकाल कर अट्ठहास करते। कभी किसी के पीछे कुत्ते की तरह दुम हिला-हिला कर फिरते तो कभी किसी की हां में हां मिला कर अपने मन को संतोष दे लेते। कभी किसी को आश्वासनों की झड़ी लगाकर अपनी कर्मठता की दुहाई देते नहीं थकते तो कभी किसी के दुःख में महामानव सी सहानुभूति प्रदर्शित करने में सबसे आगे रहते। वे चुनाव के दंगल में हर तरह के दाव-पेच लड़ाकर अपने प्रति द्वन्द्वी को चित्त-पट्ट करने में एड़ी-चोटी का जोर लगा रहे थे। घातों पर घातों के पत्ते चलकर नहले पर दहला मारने पर उतारू थे। वे पूरी तरह कमर कसे हुये थे। फिर भी जब वे गणित लगाने बैठते तो उनकी हवा खिसकने लगती उनके साहस के अस्तर ढीले पड़ने लगते उनकी आशा धूल चाटती नजर आती और वे स्वयं को हारा हुआ खिलाड़ी पाते।

उन्होंने संस्था के अध्यक्ष का चुनाव क्या लड़ा कि परेशानियों का पहाड़ सिर पर उठा लिया। न रात में नींद और न दिन में चैन। रात-दिन वही चुनाव की चर्चा-वह मुझे वोट देगा—ये उसे देगा। सारे घर में तो कुहराम मचा ही हुआ था-सारे मतदाताओं में भी गर्म जोशी से वे चर्चा के विषय बने हुये थे। सारे निशाने जब उनके खाली जाते हुये उन्हें नजर आने लगे तो उन्होंने एक नया दाव फेंकने की योजना सोच ली। योजना के हर पहलू पर विचार करते ही उनका मन खुशी के मारे फूल उठा—उनकी बाछें खिल गईं। अधरों पर बलात् मुस्कान का झरना फूट निकला और वे चुनाव की प्रतीक्षा बड़ी आशाभरी दृष्टि से करने लगे।

चुनाव की घड़ी भी आई। वे अपनी योजनानुसार एक सजी-संवरी लेडीज़ के साथ समिति के कार्यालय में पहुंचे। लोगों ने उनकी ओर कम उनके साथ गई लेडीज की ओर बड़ी ललचाई हुई नजरों से देखने लगे। वे मन्द-मन्द मुस्कराते हुये उनसे इस लेडीज का परिचय पूछते तो ये संक्षिप्त सा उत्तर देते देहली से प्रकाशित होने वाली प्रसिद्ध मासिक 'पत्रिका की संपादिका हैं मेरी मेहमान हैं इस शहर में केवल दो दिन और रुकेंगी?'

बस अब क्या था अंधे को क्या चाहिये एक आंख। साहित्यकारों एवं कवियों को कोई सम्पादक टकरा जाये तो इसे वे अपना सौभाग्य समझते हैं। और कहीं ये सम्पादक लेडीज के रूप में हुये तो फिर क्या ढह गया पूरा कहर। भाड़ में जाये साहित्यिक संस्था आग में लगे अध्यक्ष का चुनाव जिस पटरी को बिछाने के लिये ये उठा-पटक हैं यदि वह घर ही आजाये तो फिर बम्मी में नाग पूजने कौन जाये। देखते-देखते सारे मतदाता उस लेडीज के आस-पास मनचले मजनुओं की भांति जमघट के रूप में इकट्ठे हो गये और वे इतने सम्मोहित हुये कि वे उसके इशारों पर नचने लगे। अब क्या था मात्र संकेत की देर थी। चुनाव की प्रक्रियापूर्ण होने से पूर्व ही सारा माहौल पलटा खा चुका था। चुनाव में उनके प्रतिरोधी को बुरी तरह पराजित होकर मुंह की खानी पड़ी, उन्हें करारी चोट दे दी गई थी। चुनाव के विजयी उम्मीदवारों की घोषणा देते ही सारे मतदाता यह सोचकर दांतों तले अंगुली दबा कर सुन रह गये कि लेडिज के वेश में उनका एक मित्र उनके सामने आ खड़ा हुआ था जिसने अब अपने स्त्री के वस्त्र उतार फैंके थे।



सिलबिल पिलपिल — उड़नतश्तरी
एक और उड़न तश्तरी आसाम में देखी गयी । हम लोग कितने बदकिस्मत हैं कि हमें कोई उड़न तश्तरी जिन्दगी में दिखाई नहीं दी ।
दुनिया में कई जगह उड़न तश्तरियां देखी गयीं । कई लोगों का तो दावा है कि उन्होंने दूसरे ग्रह के लोगों से बातचीत भी की है । उनके आटोग्राफ भी लिये हैं।
जो सबसे पहले उड़न तश्तरी वालों से मिलेगा उसकी जिन्दगी बन जायेगी।
काश मेरे साथ ही यह घटना होती । किसी दिन रात को मुझे नींद नहीं आ रही है । मैं कैमरा लेकर पार्क में बैठने के लिये जाऊं ...
इतने में आसमान में चमक कौंध जाये और एक उड़न तश्तरी आकर मेरे सामने उतरे। उसमें से मंगल ग्रह के आदमी उतर कर मुझ से हरयाणवी में बात करें, मैं उनके फोटो खींचूं, फिर दुनिया वाले मेरा लोहा मान जायेंगे।
सिलबिल साहब, धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान के ऐडीटरों ने टेलीग्राम भेजे हैं कि आप एक-एक सचित्र लेख उनकी पत्रिकाओं के विज्ञान अंक के लिये फौरन भेजें । आप कहें तो पैसे पेशगी भेजे जायेंगे।
जवाब दे दे, मेरे पास टैम की कमी है। एक अकेला मानुष कितने मैगजीनों के लिये लिख सकता है। न्यूयार्क टाइम्स, वाशिंगटन पोस्ट, प्रावदा, पीकिंग पीपुल्स डेली वालों के लेख ही पूरे करने मुश्किल हो रहे हैं हालांकि आठ टाइपिस्ट रोज मेरे लेख टाइप कर रहे हैं।
दुनिया भर के मैगजीनों से रोज एक बोरी भर कर अब तक छपे लेखों के पारिश्रामिक के चैक आ रहे हैं । पौंड, शिलिंग, डालर का हिसाब रखते हम थक गये।
चैकों के जमा कराने के लिये स्लिपें भरते-भरते मेरी सारी अंगुलियां टेढ़ी हो गयी हैं, इनका इलाज कराने के लिये मुझे स्विटजर लैंड जाना पड़ेगा।
कल मैं बैंक गया था तो मैनेजर कह रहा था कि अपना एकाउंट किसी और बैंक में खुलवा लो, हमारे पास इतने पैसे रखने की जगे नहीं है।



बाहर टी. वी. वाले और आल इंडिया रेडियो वाले धरना दिये बैठे हैं । कहते हैं कि सिलबिल साहब से इन्टरव्यू लेना है । दूरदर्शन वाले तो अगले इतवार को फ़ीचर फिल्म की जगह तेरा इन्टरव्यू ही दिखाना चाहते हैं । सूचना व प्रसारण मंत्री पाठे साहब खुद बाहर बैठे हैं । आखों में आंसू भर कर मुझ से कहने लगे इन्टरव्यू दिलवा दो।
भाई मेरे पास टैम कहां है? मैंने जो इन्टरव्यू बी. बी. सी. वालों को दिया था वही क्यों नहीं दिखाते टी वी वाले।
सर आपको याद है आज इंदिरा जी के यहां आपका डिनर है । कल दिल्ली के गवर्नर की अध्यक्षता में रामलीला मैदान में दिल्ली के नागरिकों की ओर से स्वागत समारोह होना है। बम्बई में परसों आपका स्वागत जलूस है . . .
अब मैं एक अकेला आदमी क्या-क्या करूं? समझ में नहीं आता।
दुनिया भर के गोरमींटों की तरफ से मुझे अपने अपने यहां आने का निमन्त्रण मिल रहा है । सब राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री मेरे सम्मान में भोज देने के लिये लालायित हैं।
यही हाल रहा तो सारी दुनिया के राष्ट्राध्यक्ष मुझसे राष्ट्र का जनरल सैक्रेटरी बनने की विनती करेंगे । मुझ पर और भारी जिम्मेवारी आ पड़ेगी । फाकलैंड का मसला मुझे ही सुलझाना पड़ेगा । काश्मीर का भी हल खोजना ही पड़ेगा । पाकिस्तान को एटम बम बनाने से रोकना होगा।
फिलिस्तीन वालों को इजरायल से उनकी जमीन दिलानी पड़ेगी। बड़े राष्ट्रों में जो हथियारों की होड़ चल रही है उसे कम करना होगा । दक्षिण अफ्रीका में काले लोगों को उनके अधिकार दिलाने होंगे । दुनिया से भूख, बेकारी और गरीबी हटाने के लिये भी प्रयत्न करने होंगे । मैं अकेला आदमी क्या-क्या करूंगा ? जैमिनी हरयानवी को अपना पी. ए. बनाऊंगा और काका को एसिस्टैंट।
इधर सिलबिल अपने महान् विचारो के समुद्र में लंगोट पहन कर डुबकियां खा रहा था और उधर सचमुच एक उड़न तश्तरी उसी पार्क में उतरती है।
हमें इसी पार्क में उतरना चाहिये
यही जगह ठीक है । रोजर . . . हम लैंड करने वाले हैं।


यह नहीं होगा । अगर सिलबिल यू. एन. ओ. का जनरल सैकेटरी बन गया तो हिन्दुस्तान को कौन संभालेगा? सिलबिल पर पहला हक भारत का है । उसे यहां की समस्यायें पहले सुलझानी होंगी।
INDIA
अगर सिलबिल को संयुक्त राष्ट्र संघ जाने दिया गया तो हम हरयाणे की सारी बागडी भैंसें दूध देना बंद कर देंगी ।
और गुडगांवे के आसपास जितने पोल्टी फार्म हैं उनकी हम मुर्गियां अंडे नहीं देंगी।
X
वापिस ऐंड्रोमेडा कंट्रोल रूम को खबर भेज दो कि हम धरती पर उतर गये हैं । और स्थिति का जायजा ले रहे हैं।
यह अच्छा ही हुआ कि हम रात को उतरे, यहां के जीवों द्वारा हमले का खतरा नहीं होगा।
वह उधर एक जीव नज़र आ रहा है।
अकेला है, हम पर आक्रमण भी नहीं कर पायेगा। हमें इसी के पास चल कर देखना चाहिये कि यह जीव क्या बला है?
लगता तो कुछ-कुछ हमारे जैसा ही है, शायद इस ग्रह का सबसे उन्नत प्राणी है यह । यहां का राजा भी यही होगा । अगर सचमुच ऐसा है तो हमें पूछताछ करने में आसानी होगी। हो सकता है दोस्ती का हाथ भी बढाये।

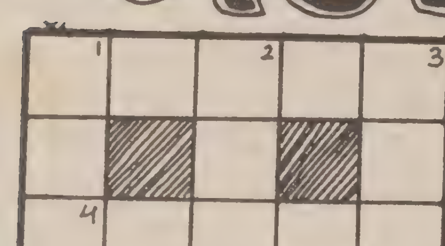




सिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये

दीवाना वर्ग पहेली

जीतिये इनाम १० रू०



संकेत बायें से दायें

१. ऐसा दिल बहलाव जिसमें बहुत भारी दुख है ? (५)

४. चेहरा जिसमें खाने वाली जगह के पीछे पूरी पंगत बैठी है ? (५)

५. इसमें करने के लिये उल्टी लाश मुट्ठी में की है ? (२)

६. सोलह के बाद का अधूरा सैशन ? (२)

संकेत ऊपर से नीचे

१. वेट बहुत बढ़ जानें के कारण फैली कटुता ? (२-३)

२. यहाँ होली क ड़ामा खेला जाता है ? (४)

३. सुन्दर आंखें जिनमें थोड़ा-सा मैल है ! (५)

अन्तिम तिथि — १६-७-८२

नाम ---------------

पता ---------------

हंसना मना है

एक देहाती सज्जन बम्बई की एक डबल डैकर बस में सफर कर रहे थे। वे ड्राईवर के निकट बैठे थे और निरन्तर उससे बातचीत कर रहे थे। परेशान हो उन से पिंड छुड़ाने के लिये ड्राईवर ने उन्हें ऊपर की मंजिल में जा हवा और नजारों का आनन्द उठाने की सलाह दी।

सज्जन तुरन्त ही उठ कर ऊपर की मंजिल में चले गये परन्तु कुछ देर बाद वापिस आकर ड्राईवर के पास आ बैठे। उन्हें वापिस आया देख ड्राईवर ने पूछा—

"क्यों दोस्त, ऊपर आनन्द नहीं आया"?

"ऊपर हवा और दृश्य तो बहुत ही आनन्दमय हैं परन्तु सुरक्षा नहीं है, वहां कोई ड्राईवर नहीं है।"

एक बार हमारे एक मित्र के घर उनके कुछ रूसी मित्र भोजन करने आये। उनके साथ एक आठ वर्षीय लड़का भी था।

पूर्ण भारतीय भोजन परोसा गया। फूली हुई गोल-गोल पूरियों को देखते ही लड़के ने पूछा, "अंकल आप इनमें हवा कैसे भरते हैं।"

दो साहित्यकार आपस में नोंक झोंक कर रहे थे, हर दूसरे की बात काटने में लगा था। कुछ देर बाद पहला बोला, "तुम्हारे दिमाग में तो गोबर भरा हुआ है"।

दूसरा तुरन्त बोला "तो फिर तुम इसे चाट क्यों रहे हो?"

लड़की एक पुलिस अफसर से—"क्या मैं आप से कुछ अश्रु गैस खरीद सकती हूं?"

"किस लिये?" अफसर ने पूछा.

"रात को जब मेरे पति घर आयेंगे उस समय एक बढ़िया साड़ी के लिये, रोना चाहती हूं,"

जब से हमारे एक मित्र ने अंक ज्योतिष की पुस्तक हमें भेंट की है, मेरी पत्नी की रुचि अंकों में बहुत बढ़ गई है

एक दिन गणित की लम्बी चौड़ी समस्याओं को हल कर लेने के बाद मेरे समीप आ कर बोली, "हमारे नामों के अंकों के अनुसार, मेरी तुम से मित्रता होनी चाहिए"।

"कितनी अच्छी बात है", मैंने उत्तर दिया।

"परन्तु लगता है शादी" मैंने गलत आदमी से कर ली है"।

एक साल गर्मियों की दोपहर को पांच बजे के करीब एक चिड़िया हमारे बाग में सीटी जैसे स्वर में पुकारती थी। हर दोपहर मेरे पिता उसकी सी ही सीटी बजा उसकी पुकार का उत्तर देते थे, जिसके उत्तर में चिड़िया फिर वैसा ही स्वर निकालती थी।

जब यह क्रम बहुत दिन तक चलता रहा तो मेरे पिता ने अपने मित्रों से कहना आरम्भ किया कि वे चिड़िया से बात करते हैं।

एक दिन जब मेरे पिता का चिड़िया से वार्तालाप चल रहा था कि अचानक मेरी निगाह पड़ौस के घर पर पड़ी। हमारे पड़ौसी अपने बाग में खड़े मेरे पिता की सटियों का उत्तर दे रहे थे। दोनों ही समझते थे कि चिड़िया सीटी का उत्तर दे रही है।

एक गंजे आदमी ने दवा फरोश की दुकान पर एक नये बाल उगाने के लोशन का इश्तहार देखा "चमत्कारी परिणाम की गारंटी", दावा था। वह दुकान के भीतर गया और नये लोशन की एक बोतल मांगी।

"चमत्कार ही शब्द है", दुकानदार ने विश्वास दिलाया" आपको छोटा या बड़ा कौन सी पैक चाहिये ?

'एक छोटा" वह बोला" मुझे लम्बे बालों की सनक से बेहद नफरत है ।

मैं अपनी पुरातत्व सामान की दुकान पर एक ग्राहक को सामान दे रहा था कि बहुत जोर से कुछ गिर कर टूटने की आवाज सुनाई दी।

साथ ही मैंने एक नये कर्मचारी, को अट्ठारवीं शताब्दी के फूलदान के टुकड़ों के निकट खड़े देखा।

मैंने पूछा तुम्हें मालूम है तुमने कितना पुराना फूलदान तोड़ डाला है?"

'शुक्र है खुदा का, मैंने तो सोचा था नया है"।

हनीमून पर जाता हुआ, नया जोड़ा रेलवे स्टेशन पर खड़ा था, बिना सोचे दूल्हे ने एक टिकट मांगा 'परन्तु तुरन्त ही उसकी पत्नी ने टोका "क्यों राकेश तुमने एक ही टिकट क्यों मांगा?"

एक क्षण भी हिचकिचाये बिना वह बोला, "अरे भगवान! तुमने अच्छा याद दिलाया प्रिये! मैं अपने को तो बिलकुल ही भूल गया था"।



शुतुर्मुर्ग के अंडे का छिलका चीनी के बर्तन जितना मोटा होता है। अंडे को तोड़ने के लिये आरी और हथौड़ी की आवश्यकता भी पड़ सकती है। इस अंडे का वजन तीन पाउंड से भी अधिक होता है और अंडे से निकलने पर नन्हे शिशु पूरी व्यस्क मुर्गी जितने होते हैं। यदि इस अंडे को उबालने का प्रयास किया जाये तो लगभग दो घंटे लगते हैं। नर शुतुर्मुर्ग ३३० पाउंड वजन का होता है और दस फीट से भी कभी-कभी ऊंचा निकल जाता है इसी कारण शुतुर्मुर्ग को संसार में पाया जाने वाला सबसे बड़ा पक्षी माना जाता है।

सौर परिवार का सबसे बड़ा ज्वालामुखी मंगलग्रह पर स्थित ओलियम्पस मोन्स नामक ज्वालामुखी है। यह १६ मील ऊंचा है और तले पर ३७५ मील की दूरी तक फैला है। हवाई के ऊंचे से ऊंचे ज्वालामुखी अधिक से अधिक समुद्रतल से ६ मील ऊंचे हैं।

अफ्रीका में पाई जाने वाली लंगफिश चार वर्ष तक बिना पानी के जीवित रह सकती है। सूखा पड़ने पर यह गढ़ा खोद कर उसमें अपने को थूक और मिट्टी के आवरण से ढक लेती है। जिसमें सांस लेने के लिये थोड़ी सी खुली जगह छोड़ देती है। आवरण सूख कर सख्त हो जाता है परन्तु मछली सुरक्षित रहती है। वर्षा आने पर आवरण स्वयं घुल जाता है और मछली तैर कर चली जाती है।


फैण्टम - गुमनाम कमाण्डर
देर से आने वाले व्यक्तियों के लिये
४०० वर्ष पूर्व, नाविक लूटमार से बचने वाला अकेला व्यक्ति जो बह कर बंगाला के सुनसान समुद्र तट पर आ गया था और उसे मित्र पिगमियों ने उठाया था।
उसने अपने पिता के हत्यारों की खोपड़ी हाथ में लेकर शपथ खाई थी, . . .वही प्रथम फैन्टम था . . . !
मैं अपना जीवन समुद्री डकैती निर्दयता और अन्याय को समाप्त करने में लगा दूंगा. मेरे पुत्र मेरा अनुकरण करेंगे.
उसके वंशज कार्य करते रहे . परन्तु समुद्र, लूटने वाले तथा जंगल के लोग, उन्हें एक ही व्यक्ति समझते थे और कथा आगे चलती रही
वह व्यक्ति जो कभी मरता नहीं।
अब — फैन्टम परम्परा का २१वा व्यक्ति — दुष्कर्म करने वालों को हर जगह समाप्त करने वाला . . .वह अकेला ही कार्य करता है —दी फैन्टम!
चलता फिरता भूत
© 1980 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved.
मावीटान
घने जंगल
धुंए वाले पहाड़
फुसफुसाने वाले झुरमुट
फैन्टम का सिर
फैन्टम शहर
सुनहरा समुद्रतट
ईडन का टापू
फैन्टम के बहुत से घर हैं.
THE PHANTOM HAS MANY ABODES...
सबसे नया, सबसे अद्भुत—वृक्ष घर.
उससे पुराना है 'द आयरी' जो मेसा जिसे वाकर की मेज कहा जाता है के ऊपर है.
इससे भी पुराना है एक गुप्त स्थान जो कोकानिया में एक महल के खंडरों में है.
सबसे पुरानी है घने जंगलों की खोपड़ी गुफा
उन के लिये जो देर में आये हैं.
यह निशान हटेगा नहीं (रोते हुए)
WHAM
खोपड़ी की अंगूठी! संसार में सभी दुष्कर्म करने वालों की परिचित तथा भयभीत करने वाली, फैन्टम की फौलादी दायीं मुट्ठी पर पहनी हुई.
यह कभी भी नहीं हटेगा
शुभ चिन्ह की अंगूठी फैन्टम ने बायीं हृदय के निकट पहनी हुई.
DR. AXEL'S HOSPITAL
जिसके शरीर पर इसका चिन्ह होगा उसकी रक्षा फैन्टम सदा करेगा.



जंगल के किनारे पर पानी के गड्ढे शहर की क्लब के स्वीमिंग पूल बन गये।
FALK & BARRY 7/25
मिट्टी की झोपड़ियों वाले गांव आधुनिक शहर बन गये.
परन्तु घने जंगल फैन्टम के शहर में अभी भी पंजे तथा जबाड़े की ताकत का बोल वाला है और उसी का शासन है। पशु आरक्षण गृह.
© 1980 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved
बहुत देश जंगली पशु पक्षियों को बचाने के विषय में प्रयास करते हैं.
परन्तु पशुओं को मारने वालों तथा बुलडोजर से, हारने वाली लड़ाई चल रही है।
परन्तु अब भी जहां घने जंगल में बड़े-बड़े झुंड घूमते हैं, एक स्थान सुरक्षित है
FALK & BARRY 7-26
ओह! उसे तो देखो.
शिकार चोर
वाओ! मनो हाथी दांत
गैंडों की खालों से भरे जंगल
यहां शिकार के रखवाले कहां हैं.
यह सब किसी न किसी की मिलकियत तो होगी ही. शायद यहां के स्थानीय वासियों की हो, उन्हें तो खरीदा जा सकता है.
उस अजीब पहाड़ी को देखो, मानव खोपड़ी सी दीखती है।
FALK & BARRY 7-28
हमें शिकार करने का लाईसेन्स चाहिये, उन्होंने ही हमें यहां आने को कहा था. जंगल पेट्रोल......
कर्नल आपसे मिलेंगे.
मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूं सज्जनों
हमें शिकार खेलने का लाईसेन्स चाहिये, कर्नल.
FALK & BARRY 7-29
उस क्षेत्र में जनाब.
धने जंगल में, वहां अनुमति नहीं मिल सकती.
क्यों कर्नल?



हमारा पेट्रोल केवल जंगल की हदों की रक्षा करता है १००० मील आरपार ग्यारह-प्रदेशों के . . .तस्करों तथा शिकार चोरों से भी हदों की सुरक्षा की जाती है.
ओह काफी बड़ी जिम्मेदारी है.
FALK & BARRY 7-30
घने जंगल जहां तुम शिकार करना चाहते हो, हमारे अधिकाराधीन नहीं हैं.
फिर किसके आधीन हैं?
© 1980 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved.
यहां के स्थानीय कबीले ललोंगो और वाम्बसी जातियों के आधीन हैं.
ओह अच्छ फिर तो ह उन से किस प्रकार निब लेंगे.
उतना स हाथीदांत
कर्नल क्या वे स्थानीय आदिवासी हमें शिकार की अनुमति दे देंगे? वह . . .अर . . .अर . . .
ललोंगो और, वाम्बसी? नहीं!
शिकार के संसार में बचे हुए सबसे बड़े झुंड यहीं हैं तथा यह आदिवासी इन्हें ऐसे ही छोड़ देना चाहते हैं.
वे कुछ पशुओं का अपने भोजन के लिये शिकार करते हैं.
FALK & BARRY 7-31
वे ट्रोफीज तथा हाथीदांत औ खालों के लिये बिलकुल शिकार नहीं करते, तथा शिकार करने वालों को सख्त सज़ा भी देते हैं
अर . . .कैसे कर्नल?
हमने सुना है आदिवासी अपराधियों तथा शिकार चोरों को प्राचीन असभ्य दण्डों से दण्डित करते हैं.
जैसे चीटियों की मांद में दफना देना या फिर बांध कर शेर इत्यादि का भोजन बनाना.
FALK & BARRY 8-1
हमें पक्का नहीं मालूम, परन्तु कभी भी कोई शिकार चोर वापिस आता नहीं देखा है.
कोई और प्रश्न सज्जनों.
!!!
कर्नल बोरुबू कम्पनी, जंगल पेट्रोल
अभी भी घने जंगलों में शिकार करने का विचार है जनाब.
अधिक स्वस्थ नहीं प्रतीत होता, चीटियों की मांद में दफनाया जाना या शेर का भोजन बनाया जाना
उस क्षेत्र से बचे रहने का एक और भी कारण है, इस क्षेत्र को फैन्टम प्रदेश कहते हैं.
इसका क्या अर्थ है कर्नल भूत?
क्योंकि तुम वहां जा ही नहीं रहे हो, इस बात की चर्चा बेकार ही है. नमस्कार सज्जनों.
FALK & BARRY 8-2

अंक ८ में प्रकाशित वर्ग पहेली का सही हल

चौं	ली	दा	म	न	कां
■	पा	व	न	म	नं
क	यो	त	■	रु	■
शे	ती	■	ना	का	मं
शि	■	ब	टे	र	ना
या	त	ना	■	म	ली

निर्णय लाटरी द्वारा

विजेता—राजेन्द्र सिंह, बेदी, अमृता फोटो स्टूडियो, सितार गंज, नैनीताल, (उ. प्र.)

अंक ९ में प्रकाशित वर्ग पहेली का सही हल

अ	सा	मा	जि	क
म	■	ह	न	न
न	ह	र	■	प
चै	ल	■	चो	री
न	क	सी	र	■

(निर्णय लाटरी द्वारा)

विजेता—सुरेन्द्र चोपड़ा, २२२, अवतार मार्केट हरबंस नगर, जालन्धर

दीवाना

के वार्षिक सदस्य बनिये और १० रुपये बचाइये

चन्दे की दरें

वार्षिक	अर्द्धवार्षिक	एक प्रति
२७ रुपये	१४ रुपये	१ रुपये ५० पैसे

साधारण रुप से दीवाना की सदस्यता शुल्क ३६ रु. एवं डाक खर्च अलग से होती है। लेकिन आप अभी सदस्य बनिये और १० रुपये बचाइये एवं अपनी कापी अपने घर या दफ्तर में प्राप्त कीजिये।

नीचे दिये कूपन को भरिये और चन्दे की रकम के साथ हमें डाक द्वारा भेजिये। चन्दे की रकम केवल दीवाना के नाम से ही भेजें।

अपना सदस्यता शुल्क शीघ्र भेजिये

सरकुलेशन मैनेजर, दीवाना, ८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

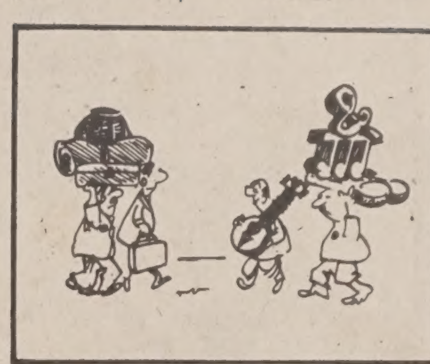
कृपया मुझे दीवाना के वार्षिक/अर्द्ध वार्षिक ग्राहकों की सूची में सम्मिलित कर लीजिये। मैं चन्दे की रकम———— रुपये भारतीय पोस्टल आर्डर/डिमांड ड्राफ्ट/मनीआर्डर नं.————————से भेज रहा हूं।

नाम————————————————

पता————————————————

————————शहर/जिला————————

राज्य ————————पिन कोड————————



दीवाना लघु विज्ञापन



अशोक कुमार रुहेला राजपूत मु. पो. विलराया जि. खीरी (लखीमपुर), १८ वर्ष, दीवाना पढ़ना।

सुनील बतरा द्वारा खुराना जनरल स्टोर, शास्त्री मार्कीट, जीन्द (हरियाणा), १९ वर्ष।

वेद प्रकाश बंसल द्वारा वेद प्रकाश सीताराम, ८ धान मण्डी (जलंधर), २४ वर्ष, पत्र-मित्रता।

राजू नागवानी, गंज चौक, नेलीबाड़ा, रायपुर, म. प्र., १८, वर्ष, पत्र-मित्रता, ताली पीप बजाना।

कमलेश पाटीदार द्वारा श्री एस. एल. पाटीदार सम्भागीय अभियंता खरगोन-४५१००१ म.प्र. १६ वर्ष, डिस्को सुनना।

विरेन्द्र कपूर (विक्की), ३७० पार्क, जयपुर, २४ वर्ष, पत्र मित्रता।

राजा श्याम सुन्दर बेसरा, रेलवे कालोनी, झारसुगुड़ा, सम्बलपुर (उड़ीसा), २० वर्ष, किताब पढ़ना।



ईश्वरलाल बेरूनानी, १०/B नवाब सिराजुल इस्लाम लेन, कलकत्ता-१६, १९ वर्ष।

किशोर कुमार द्वारा सुपर सलेक्सन हाऊस, गोल बाजार, बिलासपुर-१, १८ वर्ष, गाने गाना।

संजीव माहेश्वरी, देवेन्द्र भवन, चौक बाजार, सरधना, मेरठ, उ. प्र., २० वर्ष, टिकट संग्रह।

सुरेन्द्र कुमार सिन्हा, रेलवे कालोनी बस्ती (यू.पी.), १८ वर्ष, 'दीवाना' पढ़ना।

एस. एच. अन्सारी, ५२३ अटाला, इलाहाबाद-३, १७ वर्ष, पत्र-मित्रता, सभी को खुश रखना।

अनिल कुमार, गंगा शहर रोड, बाल भारती स्कूल के पास, बीकानेर, १८ वर्ष।

केशवसिंह, नेपाल गंज, फुल्टे क्रालाईन, वार्ड न. ६ (नेपाल), १८ वर्ष, फिल्में देखना।



विजय, म. न.-४११४, गली केशर वाली, पहाड़ गंज, दिल्ली-४४; वर्ष।

फहीम अजीज 'दीवाना', ११५, न्यू शाहमारुफ, गोरखपुर-२७३००१ (उ.प्र.), २१ वर्ष।

राम निवास राय टर्नर ट्रेड (आई.टी. आई) एकतियासल, सिलिगुड़ी, दार्जिलिंग, १८ वर्ष।

टोनी ठकराल, १/६ रेलवे क्वाटर दया बस्ती दिल्ली-३५, १७ वर्ष, खेलना और पढ़ना।

मुकेश कुमार, ९१ खुडबुडा मौहल्ला, देहरादून, १७ वर्ष, गाना बजाना व फैशन करना।

राजेन्द्र कुमार, २८ लुनिया मौहल्ला, देहरादून-१, १७ वर्ष, जासूसी, जूडो, लेखन, पत्र-मित्रता।

शलेन्द्र कुमार, सीमान्त गांधी नगर, बजरंगपुरा, इटारसी, म.प्र., ११ वर्ष, हाकी, क्रिकेट, फुटबाल देखना



बलदेवराज अरोड़ा, बस स्टैन्ड गिदड़बाहा-१५२१०१, वर्ष, पत्र-मित्रता, रेडियो सुनना।

जगदीश कुमार नागपाल, २५३/३ २२ लाल सड़क, हांसी, हिसार, २१ वर्ष, पत्र-मित्रता, प्यार करना।

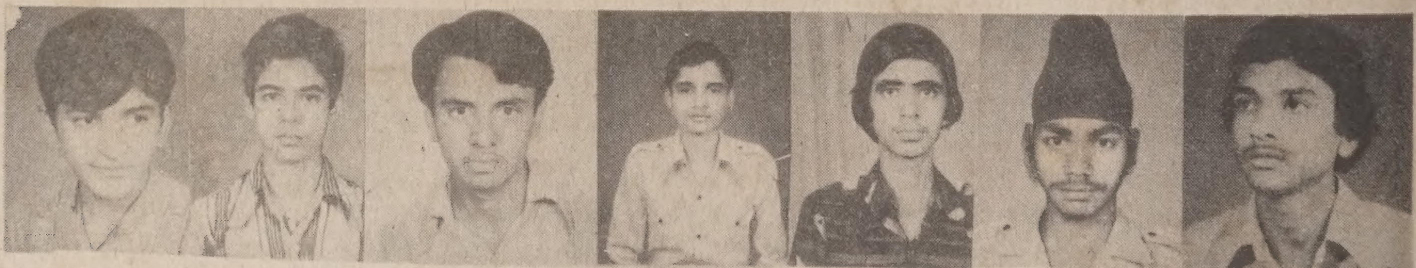
बिकल श्रेष्ठ, सुकुलढोका, भलपुर-८, वागमती अञ्चल, नेपाल. २१ वर्ष।

सतीश कुमार गौतम, पुलिस चौकी डिबाई, (बुलन्दशहर) १७ वर्ष, बैडमिंटन, क्रिकेट, गाना सुनना।

महावीरचन्द गाडिया द्वारा श्री राम पुरम बैंगलोर-२९, २० वर्ष, पत्र-मित्रता, दोस्ती करना।

लालचन्द पंवार द्वारा रामेश्वर जी पंवार सोनगिरी कुआ, बीकानेर, २१ वर्ष, फिल्में देखना।

रविशंकर खत्री (धुन्धा), प्रेम रत्लाजी, धवीली धटीके नीचे, १८ वर्ष, फोटोग्राफी, डान्स करना।



सुनील कत्याल द्वारा मनोहर लाल कत्याल, पुराना आर्य नगर, नजदीक शिवा स्कूल, रोहतक, १६ वर्ष।

मो. अशरफ खान अजमी, किराना मर्चेन्ट मं. न. २२८ नगर, भिवानी, १४ वर्ष, पत्र-मित्रता।

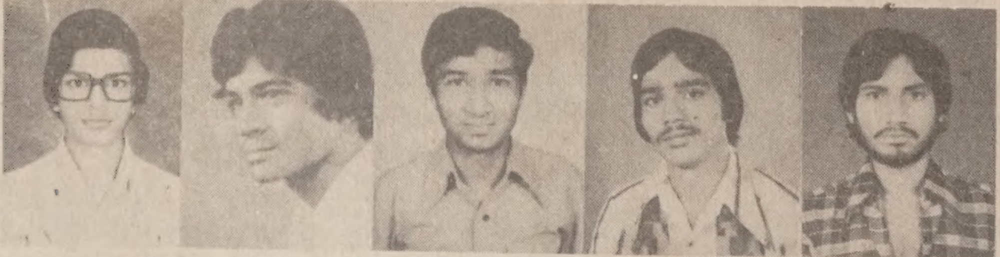
चुन्नू अभय कुमार, पोस्ट-कुस, रांची गैबी बिहार, १६ वर्ष, घूमना एवं साहित्य पढ़ना।

मुहम्मद उजैर रामनगर, छिबरामऊ फर्रुखाबाद, (उ०प्र०) १५ वर्ष, क्रिकेट, पढ़ना।

सीतल दास बसंतवानी, रामपुरी कैम्प, अमरावती, १८ वर्ष, फिल्में देखना, दीवाना पढ़ना।

सरहार दिनदयाल सिंह मुछाल पो. डिस्पेन्सरी कोटडी, कोटा (राज.) १४ वर्ष, दीवाना पढ़ना।

उबेदुर्रहमान टोकी, पांच बत्ती, बरकात, अहमद रोड, टोंक (राज) १७ वर्ष, मोटर-साईकल चलाना।



ललित मोहन सालगानी द्वारा सीताराम सालगानी गली डाकोता वाली, नोहरिया बाजार, सिरसा।

अनूपकुमार गुप्ता, जडोदा गेट जगाधरी, हरियाणा, १६ वर्ष, क्रिकेट खेलना।

बैसाखी राम गुप्ता, गांव खरकड़ा, जि. कुरुक्षेत्र (हरियाणा), १८ वर्ष, फिल्में देखना, दीवाना पढ़ना।

गिरिश चन्द्र ठाकुर, बारकाकाना बाजार, हजारीबाग, बिहार, १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

छठी लाल प्रसाद, बरकाकाना, बाजार, हजारीवाग, बिहार, १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

दीवाना फ्रेंड्स क्लब

दीवाना फ्रेंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंड्शिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पताः दीवाना फ्रेंड्स क्लब,
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२.
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ————————

पता ————————

————————

आयु ———— शौक ————

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिये पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।